गंगा के किनारे

अभिनव-प्रकाशन, राँची

मुद्रक, एम० एन०



चतुर्भुज, एम० ए०
परिचय

जन्म १९२८ ई० । स्कूली शिक्षा प्राप्त कर जीविकोपार्जन में । प्राइवेट रूप से आई० ए०, बी० ए० और एम० ए० की परीक्षाओं में उत्तीर्ण । नालन्दा में रहकर बौद्ध साहित्य का अध्ययन । हिन्दी में रंगमंचीय नाटकों का अभाव देख कर नाटक लेखन और अभिनय की ओर प्रवृत्ति । बारह से अधिक नाटक लिख डाले । रंगमंच पर प्रशंसित । बस्तियारपुर में "मगध कलाकार" नामक सांस्कृतिक नाट्य संस्था की स्थापना । "भीरकासिम" पर उत्तरप्रदेश सरकार से पुरस्कृत । राजस्थान सरकार और संगीत नाटक अकादमी से भी आर्थिक साहाय्य । रेलवे की सेवा । फिर नव नालन्दा महाविहार (नालन्दा) में निवास । इन दिनों आकाशवाणी की सेवा ।

झेलम

चतुर्भुज ने
नाटक में शिल्पगत प्रयोग सायास किये हों
इसके प्रमाण में उद्धरण रखना मुश्किल होगा
के कथ्य
भाषा-भाव-अभिव्यक्ति
शैली-भंगिमा चतुर्भुज
ने कहीं से कुछ बाँट या काट कर कहीं जोड़ नहीं
दिया है जो कुछ है वह बल्कि है ही
विशेषतः नाटक की विधा में यह सहजता प्रणेता
से व्यापक और गहरे अनुभव की माँग रखती

किनारे

है चतुर्भुज ने अपने प्रकाशित बारह से
ऊपर नाटकों में वह दुर्लभ सहजता रंग-
मंच के व्यावहारिक अनुभव से सुलभ की है..
यहीं चतुर्भुज समकालीन नये नाटककारों से परम्परा-
दायित्व को सँकारते हुए आगे निकल जाते हैं और
उन्हें जा-लेने का प्रयास दशकों की दूरी रखेगा प्रस्तुत
संग्रह नाट्य-विधा के अभिनवतम प्रयोगों की चुनौतो
को अवकाश देता है।

झेलम के किनारे
चतुर्भुज, एम० ए०
मूल्य = रु० २.२५

★

संस्करण — प्रथम
मुद्रक — राष्ट्रीय प्रेस, राँची — १९६६
अभिज्ञान-प्रकाशन, राँची (प्रकाशक)

★

JHELAM ke KINARE
CHATURBHUJ., M. A.
Price Rs. 2.25
ABHIJYAN-PRAKASHAN, Ranchi.

झेलम के किनारे

(तीन ऐतिहासिक एकांकी)

चतुर्भुज,
एम० ए०

अभिज्ञान प्रकाशन
राँची

मूल्य २.२५ रु०

१ प्रतिशोध
३१ हुमायूँ की हार
४५ झेलम के किनारे

परिचिति

कृतज्ञ हूँ कि मेरे लिखे ऐतिहासिक नाटकों का रंगमंच-प्रेमियों ने स्वागत किया है। प्रस्तुत सभी नाटक तीन अंकों के तथा ढाई-तीन घंटे की अवधि के हैं। ये नाटक शहरों और देहातों में, विभिन्न संस्थाओं द्वारा, सफलतापूर्वक अभिनीत किये गये हैं। इन नाटकों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि रंगमंच के प्रति कलाकारों और दर्शकों को इन्होंने एक नयी दिशा में आकृष्ट किया है। यह मेरा सौभाग्य है कि कुछ कृपालु एवं उत्साही नाट्य-संस्थाओं ने मेरे प्रायः सभी नाटकों को प्रकाशन के पूर्व ही अभिनीत करने में रुचि दिखलायी और इस दिशा में मुझे प्रोत्साहित किया—कृतज्ञतास्वरूप ही यह संग्रह निवेदित है।

ऐतिहासिक घटनाओं को, इतिहास की रक्षा करते हुए, दर्शकों की मनोवृत्ति तथा आयोजकों की कठिनाइयों को भी ध्यान में रख कर, रंगमंच पर लाना कष्टसाध्य है। इसकी अनुभूति ऐतिहासिक नाटक लिखनेवाले ही को हो सकती है। मैंने अनुभव से सुविधा लेकर इसे दर्शकों-पाठकों तक सहज करने की निष्ठा में यथाशक्ति प्रयास किया है।

आज के व्यस्त जीवन में मनोरंजन के लिए बड़ा कम समय मिल पाता है। इसलिए आवश्यकता है कि छोटे ऐतिहासिक नाटक भी लिखे जायें। प्रस्तुत पुस्तक 'झेलम के किनारे' में तीन छोटे-छोटे ऐतिहासिक नाटक हैं।

पहला नाटक 'प्रतिशोध' है। पालिभाषा के ग्रन्थों में ऐसा जिक्र आया है कि बुद्धकालीन भारत सोलह महाजनपदों में बँटा था जिनमें कोशलदेश के राजा थे प्रसेनजित। 'धम्मचेतिय सुत्त' में प्रसेनजित ने भगवान बुद्ध से कहा था—"भन्ते, भगवान (बुद्ध) भी क्षत्रिय हैं, मैं भी क्षत्रिय हूँ। भगवान भी कोशलक (=कोशलवासी, कोशल-गोत्रज) हैं, मैं भी कोशलक हूँ। भगवान भी अस्सी वर्ष के हैं, मैं भी अस्सी वर्ष का हूँ।"—इससे स्पष्ट है कि अस्सी वर्ष की अवस्था तक प्रसेनजित अवश्य ही राजा रहे होंगे। उसके बाद उनके जीवन में बड़ा कष्टकर समय आया। उनके पुत्र ने उनका सिंहासन छीन लिया। प्रसेनजित मदद के लिए राजगृह गये। रात में द्वार बन्द था। रात में ही थके हुए प्रसेनजित की मृत्यु हो गई। दूसरे रोज़ अजातशत्रु को यह सूचना दी गई। उसने बड़े सत्कार से प्रसेनजित का संस्कार किया। शाक्यों का संहार करके जब प्रसेनजित का पुत्र विडूडभ लौट रहा था तो अचिरवती नदी की बाढ़ में पड़कर सेनासमेत उसकी जीवनलीला समाप्त हो गई। पालि के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'धम्मपदट्ठकथा' में भी इस घटना का संकेत मिलता है। इस नाटक में कुल पाँच पात्र हैं जिनमें दो स्त्री-पात्र हैं।

दूसरा नाटक है 'हुमायूँ की हार'। इतिहास की यह बेमिसाल घटना है कि अनेक संकटों के बावजूद मुग़ल-सम्राट् हुमायूँ ने मेवाड़ की रानी कर्णवती की भेजी राखी की लाज रखी। इसका बहुत बड़ा मूल्य हुमायूँ को चुकाना पड़ा। उसे राज-ताज तक खोना पड़ा, प्राण-रक्षा के लिए भारत छोड़कर ईरान जाना पड़ा। इस नाटक में मुग़लों के घोर शत्रु शेर खाँ के द्वारा हुमायूँ के गुणों की प्रशंसा मानवीय स्तर पर उद्घाटित है। इस नाटक में एक ही स्त्री-पात्र है।

तीसरा नाटक है 'झेलम के किनारे'—सम्राट् जहाँगीर पर नूरजहाँ के सौन्दर्य का जादू छाया था। जहाँगीर विलास में डूबे रहते थे और नूरजहाँ शासन करती थी। नूरजहाँ में महत्त्वाकांक्षा थी। शासन के रोबवाले व्यक्तियों को वह कूटनीति से परास्त कर रही थी। खुर्रम (शाहजहाँ) को शिकस्त दी जा चुकी थी। अब महावतखाँ की बारी थी। महावत ने अपनी चालाकी से सम्राट् और सम्राज्ञी को झेलम के तट पर नज़रबन्द कर लिया। लेकिन सम्राज्ञी की कूट-नीति के सामने महावत को झुकना पड़ा।

इस नाटक के प्रकाशन का श्रेय अभिज्ञान-प्रकाशन के अध्यक्ष श्री भुवनेश्वर प्रसाद सिंह को है जिन्हें इतिहास में वास्तविक और विशेष रुचि है। हिन्दी की नयी पीढ़ी के सुयोग्य कवि-लेखक श्री देवेन्द्र प्रताप पाण्डेय ने अपने अमूल्य सुझाव से पुस्तक को अधिक-से-अधिक सुन्दर बनाने में योगदान किया है। राष्ट्रीय प्रेस के अन्य कर्मचारियों ने भी इसके मुद्रण में काफी तत्परता दिखलाई—इन सब के प्रति कृतज्ञ हूँ।

—चतुर्भुज

१०६, श्रीकृष्णनगर,
पटना—१

प्रतिशोध

(बुद्धकालीन ऐतिहासिक नाटक)

पात्र-परिचय

प्रसेनजित	...	...	कोशल-नरेश
विडूडभ	...	...	प्रसेनजित का पुत्र
कारायण	...	...	स्वर्गीय बन्धुल का भाञ्जा, प्रसेनजित का सेनापति
मल्लिका	...	...	प्रसेनजित के स्वर्गीय सेनापति की पत्नी
वार्षभक्षत्रिया	...	...	विडूडभ की माता

प्रतिशोध

प्रथम दृश्य

स्थान—श्रावस्ती का राज-प्रासाद।

समय—प्रभात।

(कोशल-नरेश प्रसेनजित खड़े हैं। सामने उनके स्वर्गीय सेनापति बन्धुल की स्त्री मल्लिका खड़ी है। मल्लिका का मुख अवगुण्ठन में छिपा है। मल्लिका रो रही है।)

प्रसेन : नारी, तुम कौन हो? क्या चाहती हो?

मल्लिका : मैं हूँ.....(रो पड़ती है)

प्रसेन : मैं कौन? रोओ मत। अपना परिचय दो।

मल्लिका : मैं मल्लिका हूँ—आपके स्वर्गीय सेनापति की पत्नी।

प्रसेन : तुम बंधुल की पत्नी हो? बताओ, क्या चाहती हो?

मल्लिका : न्याय।

प्रसेन : न्याय ? तुम्हारा अभिप्राय ?

मल्लिका : आपके आदेश से मेरे पति सीमांत पर विद्रोह दमन करने के लिए गये थे। उनके सभी पुत्र भी साथ थे। रात में जब वे सब सोये थे, तो उनकी हत्या कर दी गई। (रोती हुई) महाराज ! यह भीषण हत्याकाण्ड षड्यंत्र रचकर किया गया है, अचानक नहीं हुआ है। मैं आज पतिहीन, संतानहीन, निराश्रित और दुखी हूँ। न्याय के लिए श्रावस्ती के राजद्वार पर उपस्थित हुई हूँ।

प्रसेन : मल्लिका, बंधुल मेरा सहपाठी था। हम दोनों ने एक साथ तक्षशिला में विद्याध्ययन किया था। जब वह घर से रूठ कर इधर चला आया तो मैंने उसे प्रधान सेनाध्यक्ष बनाया। तुम समझ सकती हो कि उस पर मेरा कितना स्नेह था। लेकिन बिना प्रमाण के मैं उसकी और उसके पुत्रों की हत्या के लिए किसी को दण्ड नहीं दे सकता। बताओ, हत्यारा कौन है ?

मल्लिका : न्याय माँगना मेरा काम है। हत्यारे का पता लगाना महाराज का काम है।

प्रसेन : मल्लिका, यदि तुम्हारा संदेह किसी पर हो तो नाम बताओ। दोष प्रमाणित होने पर उसे दण्ड दिया जायगा। इसे तुम सच जानो।

मल्लिका : महाराज का यश सारे भारत में सूर्य के तेज की तरह फैला है। महाराज के दाहिने हाथ—राज्य के एक प्रतिष्ठित कर्मचारी—प्रधान सेनापति की पुत्रसहित उनके शिविर में ही हत्या ! ———यह कोई साधारण बात नहीं है। फिर भी महाराज अब तक चुप रहे———शांत रहे। इस

भीषण अपराध को साधारण घटना मानकर आपने कुछ न किया। क्या———क्या———

प्रसेन : मल्लिका, तुम क्या कहना चाहती हो ? मैं चुप नहीं हूँ। गुप्त रूप से अपराधी का पता लगाया जा रहा है।

मल्लिका : महाराज, मेरे पति आपके सहपाठी थे, मित्र थे। आपके राज्यविस्तार के लिए उन्होंने रणक्षेत्र में बार-बार अपने प्राणों की बाजी लगायी, अनेक दुर्द्धर्ष शत्रुओं का मान-मर्दन किया, विजय-शकट को अपने रक्त से रंगकर बार-बार आपका अभिनंदन किया, मगधसम्राट अजातशत्रु को बंदी बनाकर आपकी सेवा में उपस्थित किया, काशी नगरी को मगध-सम्राट के क्रोध से बचाया। (कहते-कहते रो पड़ती है) लेकिन आपने उनकी हत्या पर दो बूँद आँसू तक नहीं बहाया, उनकी हत्या की मुझे सूचना तक नहीं दी। महाराज, आपसे ऐसी……

प्रसेन : (अपराधी के स्वर में) क्षमा करो मल्लिके ! तुमने दुखी होकर बहुत कुछ कह दिया। तुम दुःख के भार से दबी जा रही हो। मैं भी कम दुखी नहीं हूँ। तुम भ्रम में हो।

मल्लिका : भ्रम ? नहीं महाराज, मैं अब भ्रम में नहीं हूँ। पहले कुछ कुछ अवश्य थी। आज मेरे भ्रम का निवारण हो गया। मैं जाती हूँ———श्रावस्ती से दूर———बहुत दूर। जीवन भर मैं कहती रहूँगी कि मेरे पति की, मेरे पुत्रों की, हत्या करायी गई है, कोशल-नरेश प्रसेनजित के पास न्याय नाम की कोई चीज नहीं है, तथागत के चरणों के पास बैठकर वे जो शील, धर्म, प्रज्ञा और निर्वाण सम्बंधी घंटों बातें करते रहते हैं, वे सब दिखाने के लिए हैं।

प्रसेन : (चीखकर) मल्लिके !

मल्लिका : (उत्तेजित भाव) आप अपने लाल नेत्र दिखाकर मुझे भय-कंपित नहीं कर सकते। सत्य का गला नहीं घोंट सकते। पर्दा डालकर इस भीषण हत्याकाण्ड को नहीं छिपा सकते। ओह! मेरा सब कुछ चला गया। कुछ भी न बचा। कैसे भूल जाऊँ मैं अपने पति के उस मुख-मण्डल को, जिससे शूरता टपकती थी, जिसके सामने शत्रु खड़ा होने का साहस नहीं कर पाते थे ?

प्रसेन : बंधुल की वीरता सारे देश में प्रसिद्ध थी।

मल्लिका : आप नहीं जानते महाराज, एक बार मैंने अभिलाषा प्रकट की थी कि वैशाली की अभिषेक-पुष्करिणी में स्नान करना चाहती हूँ। वैशाली इस श्रावस्ती से काफी दूर है। वैशाली के गणराज्य में प्रवेश करना आसान नहीं था। उस पुष्करिणी पर लोहे का जाल लगा था, कड़े पहरे थे। फिर भी उन्होंने मेरी इच्छा की पूर्त्ति के लिए, बिना किसी सैनिक के, वैशाली के गणराज्य में घुसकर, वहाँ के सैनिकों को अपनी तलवार से हतप्रभ कर, पुष्करिणी में मुझे स्नान कराया। फिर वे तीर की तरह वैशाली की सीमा से निकल भी गए। मैंने वैसे पति को खो दिया। बार-बार मैं अपने मन से पूछती हूँ कि मैं क्यों जीवित हूँ ? महाराज, आप मेरी भी हत्या करा दें।

प्रसेन : मैं हत्या करा दूँ ? मल्लिके, क्या तुम समझती हो कि मैंने बंधुल की हत्या कराई है ?

मल्लिका : मैं कह चुकी हूँ कि इसके पहले मुझे भ्रम था। लेकिन अब इस भ्रम का निवारण हो गया।

प्रसेन : निवारण हो गया ? मैंने कुछ नहीं समझा।

मल्लिका : आज मैं जान गई कि मेरे पति और पुत्रों की हत्या किसने कराई है ?

प्रसेन : तुम्हीं बताओ, किसने कराई है ?

मल्लिका : यह मुझसे न पूछिये महाराज। श्रावस्ती के प्रासाद की ये दीवारें आपके इस प्रश्न को सुन कर हँस रही हैं। मेरी ओर देखिये—मेरा अवगुण्ठन हटा है, इसका मान रखने वाला अब जीवित न रहा। देखिये इस निरीह, निराश्रित, दुर्बल कायाधारिणी विधवा को। इस शक्तिहीना नारी के संमुख कोशल-नरेश को नतमस्तक होना शोभा नहीं देता। देखिये मेरे नीर-भरे नयनों की ओर। बताइए, किसकी छाया है इनमें ?

प्रसेन : (हकलाते हुए) तुम—तुम समझती हो कि मैं—

मल्लिका : हाँ। आपने मेरे पति और पुत्रों की हत्या कराई है। आपने—कोशल-नरेश प्रसेनजित ने।

प्रसेन : लेकिन प्रमाण ?

मल्लिका : आपकी गिरी दृष्टि, रक्तहीन मुखमंडल, भर्राये स्वर—सब इसके प्रमाण हैं। मैं फिर पूछती हूँ, आप ही बतायें, क्या मेरे पति और पुत्रों की हत्या आपके आदेश पर नहीं हुई है ? आप चुप क्यों हैं ? उत्तर दीजिये महाराज। मैं दीन-हीन नारी हूँ। आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकती। गंगाजल हाथ में लेकर भी यदि मैं कहूँ कि अपराधी कोशल-नरेश हैं तो कौन विश्वास करेगा ? आप भय न करें। कम से कम मेरी आत्मतुष्टि के लिए—एक बार, केवल एक बार, आप बता दें कि मेरा अनुमान ठीक है या नहीं।

प्रसेन : मल्लिके—

मल्लिका : महाराज, एकबार—केवल एक बार !

प्रसेन : हाँ, अपराधी—अपराधी मैं हूँ—मैं। हत्या मैंने कराई है। मैंने कराई है।

मल्लिका : एक भारी पत्थर जो मेरी छाती पर था, वह हट गया। लेकिन क्या मैं जान सकती हूँ महाराज कि आपने ऐसा क्यों किया ? एक साथ ही मेरे पति और पुत्रों को क्यों मरवा दिया ?

प्रसेन : मल्लिके, अपराध मैंने स्वीकार कर लिया है। अब मैं सब कुछ कह डालूँगा। बन्धुल ने मेरे लिये, मेरे साम्राज्य-विस्तार के लिये, बार-बार अपना रक्त बहाया, शत्रुओं की सेना को धूमराशि की तरह बार-बार छिन्न-भिन्न किया, मैं उसे अपना भाई समझता था।

मल्लिका : लेकिन आपने विश्वासघात किया।

प्रसेन : विश्वासघात ? हाँ, उसके कुछ अधीनस्थ कर्मचारी उसकी सफलता से जलते थे, उनलोगों ने मेरे कान भरे। उन्होंने मुझसे कहा कि बन्धुल मेरे राज्य को हस्तगत करना चाहता है। अन्त में मैं उनके कुचक्र में फँस गया। उनकी बातों पर विश्वास कर बैठा। सीमान्त के विद्रोह-दमन के लिये मैंने बन्धुल को पुत्र-समेत भेजा और फिर·····फिर मैंने ही पुत्र-समेत उसकी हत्या कराई।

मल्लिका : ओह !

प्रसेन : घटनाओं की छानबीन करने पर बन्धुल की निर्दोषिता सिद्ध हुई। लेकिन फिर मैं कर ही क्या सकता था ? प्राण तो मैं लौटा नहीं सकता था। हाँ, जिन लोगों ने मेरे

कान भरे थे, वे दण्ड से मुक्त न हो पाये।

मल्लिका : महाराज, आपने ही मेरे निर्दोष पति और पुत्रों की हत्या कराई है आज यह स्पष्ट हो गया।

प्रसेन : मल्लिके, मैंने घोर अपराध किया है। तुम्हारे सामने नतमस्तक हूँ। अपने प्राण देकर मैं इस घृणित अपराध की मार्जना कर सकता हूँ। आदेश दो।

मल्लिका : नहीं महाराज, मैं तो सब कुछ खो ही चुकी हूँ। अब मैं कोशल-राज्य का सुहाग नहीं उजाड़ना चाहती। शाक्य राजकुमारी वार्षभक्षत्रिया की सिन्दूररेखा नहीं मिटाना चाहती। जब प्रजा अपराध करती है तो राजा न्याय-विचार करता है। लेकिन जब राजा अपराध करता है तो ईश्वर न्याय-विचार करता है।

प्रसेन : तुम ठीक कहती हो। मेरे इस कलंक को गंगा का पवित्र जल भी नहीं धो सकेगा। दिनरात मैं चिंता की ज्वाला में जल रहा हूँ।

मल्लिका : मैं अपने पति को—अपने पुत्रों को—नहीं पा सकूँगी। लेकिन हत्यारे का पता चल गया।

(धीरे-धीरे प्रस्थान। प्रसेनजित उसको ओर देखते रहते हैं—फिर टहलते हैं।)

प्रसेन : तथागत के चरणों के पास बैठ कर मैंने क्या लाभ उठाया ? संसार का सबसे जघन्य पाप मैंने किया। —हत्या ! हाँ, हत्या ! मैंने बन्धुल और उसके पुत्रों की हत्या कराई। मुझे मेरे कर्मों का फल मिलना चाहिये। कौन ?

(राजकुमार विडूडभ का प्रवेश। अभिवादन।)

प्रसेन : विडूडभ, तुम कपिलवस्तु से कब लौटे ?

विडूडभ : आज लौटा हूँ।

प्रसेन : वहाँ का क्या समाचार है ?

विडूडभ : ठीक है। मैंने शाक्यसभा भी देखी। एक अशुभ बात हो गई।

प्रसेन : अशुभ बात ?

विडूडभ : हाँ, मैंने शाक्यवंश के समूल नाश की प्रतिज्ञा की है।

प्रसेन : क्या मतलब ?

विडूडभ : उन लोगों ने मेरा अपमान किया था।

प्रसेन : विडूडभ, मुझे पूरी घटना बताओ।

विडूडभ : पीछे बताऊँगा। पिताजी, मैंने सुना है कि सेनापति बन्धुल की हत्या कर दी गई।

प्रसेन : तुमने ठीक सुना है। उसके सम्बन्ध में पता लगाया जा रहा है। मेरे विचार से बन्धुल के रिक्त पद पर कारायण को प्रतिष्ठित करना उचित होगा।

विडूडभ : कारायण बन्धुल का भाञ्जा है। बंधुल इसे पुत्र की तरह मानता था। कारायण को सेनापति का पद देना ठीक रहेगा। कारायण तो मेरा सहपाठी भी रह चुका है।

प्रसेन : कारायण को सूचित कर दो कि वह शीघ्र मुझ से भेंट करे। शाक्यसभा में जो कुछ भी हुआ, उसके सम्बंध में पूरा विवरण मुझे आज अवश्य दोगे। शाक्यगण के विरुद्ध कुछ भी निर्णय लेने के पूर्व मुझसे परामर्श कर लेना चाहिये था। (प्रस्थान)

विडूडभ : परामर्श ? शाक्यदेश के सभासदों ने मेरे जन्म को हीन बताया। मेरी माँ को दासी पुत्री कहा। मैंने प्रतिज्ञा की है कि शाक्यवंश का समूल नाश करूँगा। इसमें किसी के परामर्श की आवश्यकता नहीं थी। लो, कारायण आ गया।

(कारायण का प्रवेश)

कारायण : कौन ? राजकुमार विडूडभ ? आप ननिहाल से कब लौटे ?

विडूडभ : आज आया हूँ। वहाँ का हाल पीछे कहूँगा। पहले अपने लिये एक राजाज्ञा सुनो—कौशलनरेश ने बंधुल के स्थान पर तुम्हें सेनापति नियुक्त किया है।

कारायण : बंधुल के स्थान पर ? युवराज, मैं तो बंधुल का भाञ्जा हूँ।

विडूडभ : हाँ, इसी से तुम्हारी नियुक्ति हुई है।

कारायण : मैं नहीं समझा—पहले बंधुल की, पुत्र-समेत, हत्या और फिर मेरी नियुक्ति ! अवश्य इसमें कुछ रहस्य है।

विडूडभ : बंधुल की हत्या ? क्या मतलब ? क्या पिताजी ने बंधुल की हत्या कराई है ?

कारायण : हाँ, नहीं—नहीं, युवराज ! मैंने भूल से यह कहा। आपके पिताजी ने बंधुल की हत्या नहीं कराई है।

विडूडभ : आश्चर्य ! मैं कुछ समझ न सका।

कारायण : उसकी आवश्यकता भी नहीं है। हाँ, आप अपने पिताजी से कह दें कि मुझे सेनापति का पद स्वीकार है।

विडूडभ : तुमको सेनापति के रूप में पाकर पिताजी बड़े प्रसन्न होंगे। मुझे भी बड़ी प्रसन्नता होगी।

कारायण : लेकिन मुझे प्रसन्नता नहीं है युवराज !

विडूडभ : प्रसन्नता नहीं है ? क्यों ?

कारायण : बंधुल ने जी-जान से राजा की सेवा की और उनकी हत्या कर दी गई। उनके सभी पुत्र भी मारे गये। कोई उन्हें पिण्ड देनेवाला भी न बचा। बंधुल ने पिता की तरह मेरा लालन-पालन किया था। रण-विद्या मैंने उनसे ही सीखी थी। आज उनके रिक्त स्थान को ग्रहण करने में मेरा मन संताप से हाहाकार कर उठता है।

विडूडभ : कारायण, तुम बंधुल के हत्यारे का पता लगाओ। उसे दण्ड मिलेगा।

कारायण : होना तो यही चाहिये। लेकिन उसे महाराज दण्ड नहीं दे सकते। मैं स्वयं उसे दण्ड दूँगा। उससे प्रतिशोध लूँगा—प्रतिशोध ! अच्छा छोड़िये इन बातों को। शाक्यों के नगर में तो आपका खूब सम्मान हुआ होगा। क्यों युवराज ?

विडूडभ : उन बातों की याद न दिलाओ कारायण। स्मरणमात्र से मेरा रक्त खौल उठता है।

कारायण : कोई आश्चर्य की घटना घटी होगी। क्यों युवराज ? आप तो पहली बार शाक्यों की भूमि में गये थे। आपके नाना महानाम तो तथागत के छोटे चाचा होते हैं शायद।

विडूडभ : हाँ। अच्छा होता कि तथागत शाक्यों के कोई न होते। तथागत के प्रति मेरी प्रगाढ़ श्रद्धा है। क्या करता ? खून का घूँट पीकर रह गया।

कारायण : मेरी जिज्ञासा उत्तरोत्तर बढ़ रही है। बताइए, क्या हुआ वहाँ ?

विडूडभ : कारायण, तुमसे सब कुछ कह रहा हूँ। आशा है, तुम यह बात किसी को भी नहीं बताओगे।

कारायण : नहीं बताऊँगा।

विडूडभ : तुम जानते हो कि मेरी जननी शाक्य राजकुमारी है। यही समझ कर पिताजी ने उससे विवाह किया था। मैं भी अभिमान करता था कि मेरी नसों में वही रक्त है जो भगवान तथागत की नसों में है। शाक्यों की विराट् शक्ति के दर्शन करने तथा उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने मैं उनके राज्य में गया। उनकी सभा में भी बैठा। मैंने सभी को नमस्कार किया, लेकिन किसी ने आशीष न दिया। मैं जिस आसन पर बैठता, उसे रोज धुलवाया जाता। कारण कुछ समझ में न आया। एक दिन मैंने भरी सभा में पूछ ही दिया कि इसका कारण क्या है। जानते हो, क्या उत्तर मिला ?

कारायण : क्या उत्तर मिला ?

विडूडभ : एक अट्टहास के साथ उनलोगों ने कहा कि मेरी माँ दासी-पुत्री है, मेरे बैठने से आसन अपवित्र होता है, इसीसे धुलवाया जाता है। मैं स्तब्ध रह गया। रक्त खौल उठा।

कारायण : यह तो कोशल के राजवंश का घोर अपमान है।

विडूडभ : मैंने प्रतिज्ञा की कि शाक्यों से इसका भीषण प्रतिशोध लूँगा, अपने अपमान को शाक्यों के शोणित से धोऊँगा, शाक्यभूमि पर खून की नदी बहा दूँगा। मैंने उसी क्षण शाक्यसभा का परित्याग कर दिया।

कारायण : आपके पिताजी अवश्य ही इस बात को जान जायेंगे। फिर तो भीषण परिणाम के उपस्थित होने की संभावना है युवराज।

विडूडभ : मैंने उन्हें भी थोड़ी सी सूचना दे दी है। परिणाम की चिन्ता मैं नहीं करता। अभी तो मैं जा रहा हूँ। तुम पिताजी से भेंट कर लोगे। (प्रस्थान)

कारायण : प्रसेनजित! तुमने अन्यायपूर्वक बन्धुल और उनके पुत्रों की हत्या कराई है। सावधान! कौन?

(मल्लिका का पुनः प्रवेश)

मल्लिका : (आती हुई) मैं हूँ–मल्लिका। मैंने सब कुछ सुन लिया है। तुम कोशलराज के सेनापति नियुक्त हुए हो। क्या यह सच है?

कारायण : सच है।

मल्लिका : कृतघ्न! क्या तुम इसी दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे? नीच! क्या तुम मेरे और मेरे पति के उपकार को इतना शीघ्र भूल गये? जिस राजा ने छल से मेरे निर्दोष पति और पुत्रों की हत्या कराई, उसकी तुम सेवा करोगे?

कारायण : मैंने मातृभाव से तुम्हारी पूजा की है। मुझसे विश्वास-घात की आशा न रखो मां। कारायण तुम्हारी तरह स्त्री नहीं है, अबला नहीं है। सेनापति के रूप में मैं प्रसेनजित का विश्वास प्राप्त करूँगा, और उसके बाद--

मल्लिका : उसके बाद?

कारायण : कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन सूत्र मिल गया है।

आज से कार्य प्रारंभ होगा। प्रसेनजित को ऐसी शिक्षा दूँगा कि वह जन्म भर याद रखेगा।

मल्लिका क्या करोगे?

कारायण : मैं पिता-पुत्र के बीच एक खाई खोदूँगा। कारण उपस्थित है।

मल्लिका : कौन-सा कारण?

कारायण : युवराज विडूडभ का शाक्यों द्वारा अपमान। अब तुम जाओ। विश्राम करो। मैं कोशल-नरेश से भेंट कर आऊँ। (प्रस्थान)

मल्लिका : कारायण की योजना समझ में नहीं आयी। क्या कारायण पर विश्वास किया जा सकता है?—कोई और उपाय नहीं है। कारायण को मैंने पुत्रवत् माना है। आज जब मेरा संसार उजड़ गया है तो कारायण का विश्वास प्राप्त करना ही होगा। अरे, सामने से कोशलराज और रानी वार्षभक्षत्रिया बातें करते आ रहे हैं। यहाँ से हट जाऊँ।

(चली जाती है। प्रसेनजित और रानी वार्षभक्षत्रिया बातें करते प्रवेश करते हैं।)

प्रसेन : रानी, मेरा निश्चय हिमालय की तरह दृढ़ है। तुम्हारा और युवराज विडूडभ का स्थान अब राजप्रासाद में नहीं, जंगलों में है।

वार्षभ : महाराज, एक बार आप फिर सोच लें। किस उत्साह

के साथ आपने मेरा वरण किया था, मुझे अग्रमहिषी का पद दिया था, विडूडभ को युवराज घोषित किया था। आज आपने ऐसा प्रतिकूल निर्णय क्यों लिया ? मेरा कौन सा अपराध है ? विडूडभ ने क्या किया है ? एक बार मेरे और मेरे पुत्र के विरुद्ध जो आपके अभियोग हैं, उन्हें भी तो सुनूँ।

प्रसेन : शाक्यों ने मुझे नीचा दिखलाने के लिये दासीकन्या के साथ मेरा विवाह कराया। वह दासीकन्या कोई और नहीं, बल्कि तुम हो.....तुम...वार्षभक्षत्रिया। अपने रूप से अभिभूत करके तुमने अग्रमहिषी का पद प्राप्त किया। अपने पुत्र विडूडभ को युवराज के पद पर प्रतिष्ठित कराया। ये सब तुम्हारे विरुद्ध अभियोग हैं।

वार्षभ : कोशलनरेश, क्या इन बातों की जानकारी आपको अब हुई है ? मैं पूछती हूँ कि मेरे पिता महानाम का कुल क्या हीन है ? जिस शाक्यवंश में भगवान बुद्ध ने जन्म लिया, वह क्या हीन कहा जा सकता है ?

प्रसेन : भगवान बुद्ध की बातें न करो। वे मेरे पूज्य हैं।

वार्षभ : मेरी जननी दासी थी या नहीं, यह मैं नहीं जानती। लेकिन मेरे पिता के घर में उसको वही प्रतिष्ठा थी जो एक गृहिणी की होती है। यदि वह दासी थी ही, तो आपने मुझसे विवाह क्यों किया था ? क्या यह मेरा दोष है कि मैं दासी पुत्री हूँ ?

प्रसेन : रानी, ठीक है कि यह तुम्हारा दोष नहीं है। लेकिन कोशलनरेश के लिये यह उचित नहीं कि वह अग्रमहिषी

के पद पर एक दासीपुत्री को रहने दे और उस दासी-पुत्री से उत्पन्न पुत्र को अपना युवराज बनाये।

वार्षभ : तो क्या आप मेरे साथ-साथ मेरे पुत्र को भी दण्ड देंगे ? यह अन्याय है।

प्रसेन : रानी, युवराज ही एक दिन श्रावस्ती के सिंहासन को सुशोभित करेगा। फिर मैं कैसे विडूडभ को युवराज रहने दे सकता हूँ ? जिस सिंहासन पर मेरे पिता महाकोशल बैठे, मैं बैठा, उस पर एक दासी पुत्री से उत्पन्न व्यक्ति बैठे, यह लज्जा की बात होगी। मेरा चिरअर्जित गौरव नष्ट हो जायगा, प्रजा-वर्ग में श्रद्धा नहीं रहेगी।

वार्षभ : महाराज, आप कोशलराज होकर ऐसी बातें क्यों कहते हैं ? जिस नारी को आपने अग्रमहिषी बनाया, उसे आप अपराधी के रूप में पदच्युत करेंगे, महल से बाहर करेंगे ? यह कहाँ का न्याय है ? उच्च जाति का होने से कोई महान् नहीं होता।

प्रसेन : तुम्हीं बताओ, महान् होने के लिए कौन सा गुण आवश्यक है ?

वार्षभ : मनुष्य कर्म से महान् होता है। आप ही बतायें, मुझ-में आपने कौन सा दोष पाया ? मैंने कौन से ऐसे कर्म किये कि आपके यश पर धब्बा लगा ? युवराज विडूडभ पितृभक्त है। आपकी आज्ञा से वह आग में भी कूद सकता है। उस युवक के भविष्य पर उल्का-पात न कीजिए महाराज। (रो पड़ती है)

प्रसेन : रानी, तुम नयनों के नीर से अपने हीन जन्म को

नहीं बदल सकतीं। मेरा निश्चय अटल है। आज से तुम दोनों के पद, मान, सभी छीन लिये जाते हैं। तुम दोनों में और राह के एक उपेक्षित भिखारी में कोई अंतर नहीं है। (प्रस्थान)

—:o:—

द्वितीय दृश्य

स्थान—श्रावस्ती के महल का एक भाग।

(**मल्लिका और कारायण बातें कर रहे हैं।**)

मल्लिका : कारायण ! तुमने यह क्या किया ?

कारायण : ठीक किया है माँ—खूब सोच-समझ कर किया है। कारायण का कदम गलत नहीं होता।

मल्लिका : मैं पूछती हूँ कि वार्षभक्षत्रिया और विडूडभ को तुमने वन में जाने से रोका क्यों ? क्या युवराज की मित्रता ने तुम्हारी आँखों पर पट्टी डाल दी थी ?

कारायण : नहीं माँ, ऐसी बात नहीं है। मैं जानता हूँ कि रानी और विडूडभ राज्य से निकाल दिये जाते तो तुम्हें बड़ी प्रसन्नता होती। लेकिन वे दोनों ही निर्दोष हैं।

मल्लिका : (**व्यंग से**) हूँ ! निर्दोष हैं ! दोषी और निर्दोष को पहिचानने का गुण तुममें पहले न था ? देखती हूँ कि सेनापति होने के बाद तुममें ज्ञानवृद्धि हुई है। क्यों ?

कारायण : माँ, तुम भूलती हो। दोषी तो कोशलनरेश प्रसेनजित हैं। उन्हें तो दण्ड मिलेगा नहीं। फिर रानी और युवराज को कष्ट देने से क्या लाभ ? यही सोचकर मैंने राजा को समझाया। उन्होंने अपना आदेश वापस ले लिया। इससे एक बड़ा लाभ होगा।

मल्लिका : जरा सुनूँ तो कि किस लाभ के लोभ में तुमने ऐसा किया ?

कारायण : विडूडभ के मस्तिष्क में मैंने यह बात डाल दी कि हीन-जन्म के कारण वह अब पिता का कृपापात्र न रहा। माँ, शीघ्र ही इस बात का निर्णय होगा कि श्रावस्ती का राजा कौन रहेगा —प्रसेनजित या विडूडभ। इस बात का भी निर्णय होगा कि किसकी तलवार की धार अधिक तेज है ——विडूडभ की या शाक्य वीरों की। तुम देखती जाओ। तुम्हारे पति और पुत्रों की मृत्यु का भीषण प्रतिशोध लूँगा।

मल्लिका : मेरी समझ में कुछ न आया।

विडूडभ : (**दूर से पुकारने के स्वर में**) कारायण !

कारायण : युवराज विडूडभ आ रहे हैं। तुम हट जाओ।

मल्लिका : जाती हूँ। (**प्रस्थान। द्वार खुलता है। विडूडभ का प्रवेश**)

कारायण : युवराज, आप प्रसन्न तो हैं ?

विडूडभ : हाँ कारायण।

कारायण : बहुत दिनों से एक प्रश्न मेरे मन में है। उत्तर नहीं मिल पाता।

विडूडभ : कौन-सा प्रश्न ? बताओ, कदाचित मैं उत्तर दे सकूँ।

कारायण : मगध-सम्राट् अजातशत्रु और उनके पिता बिम्बिसार में अधिक शक्तिशाली आप किसे मानते हैं ?

विडूडभ : अजातशत्रु को। यदि अजातशत्रु वीर न होते, तो बिम्बिसार को कारागार में डालकर स्वयं मगध सम्राट् कैसे होते ? वज्जियों के गणराज्य पर मागधी विजय-पताका कैसे फहराते ?

कारायण : आपका उत्तर अकाट्य है। अब आप यह बतायें कि आपके पिता और अजातशत्रु में अधिक वीर कौन हैं ?

विडूडभ : मेरे पिता। उन्होंने गत काशी युद्ध में अजातशत्रु को पराजित कर बन्दी बना लिया था। यह दूसरी बात है कि फिर वजिरा से उनका विवाह करके काशीराज्य दहेज में दे दिया।

कारायण : उत्तम ! सोचता हूँ——छोड़िये।

विडूडभ : मैं तुम्हारा अभिप्राय नहीं समझ सका। ये सब व्यर्थ के प्रश्न हैं।

कारायण : व्यर्थ के प्रश्न नहीं हैं। मैं आपकी शक्ति को तौल रहा हूँ।

विडूडभ : मेरी शक्ति को ? (कुछ हँसकर) कारायण, तुम पागल तो नहीं हो गये हो ?

कारायण : हाँ, हो गया हूँ। नहीं, कुछ-कुछ हो गया हूँ, आपके स्नेह में कुछ कुछ पागल हो गया हूँ। सोचता हूँ कि शाक्यों की सभा में जो प्रतिज्ञा आप कर आये, उसकी पूर्त्ति कैसे होगी ? सारी श्रावस्ती यह जान गई है कि आपकी माँ दासीपुत्री हैं। यह कलंक कैसे धुलेगा ? कोशल नरेश ने आपकी माँ को जो हीन जन्म के सम्बन्ध में ताने दिये, उनका उत्तर मातृभक्त विडूडभ कैसे देंगे ? कब देंगे ?

विडूडभ : मैं भी कभी-कभी यही सोचता हूँ कारायण। शाक्यों ने मेरा अपमान किया है। मेरी हँसी उड़ाई है। मैं उन पर अविलम्ब आक्रमण करना चाहता हूँ। लेकिन पिताजी ऐसा नहीं करने देंगे। वे तथागत के परम भक्त हैं। वे कोई काम ऐसा न करेंगे जिससे तथागत को कष्ट हो, और तथागत कभी नहीं चाहेंगे कि उनकी जन्मभूमि पर कोई आक्रमण करे।

कारायण : एक मार्ग है।

विडूडभ : बताओ।

कारायण : अजातशत्रु ने बलपूर्वक राजगृह का सिंहासन अपने अधिकार में कर लिया है। आप भी ऐसा कर सकते हैं।

विडूडभ : (उत्तेजित स्वर) कारायण !

कारायण : युवराज, आप उत्तेजित न हों। अजातशत्रु के पदचिन्हों पर चलने से ही आप के उद्देश्य पूरे होंगे। यदि आप मेरी योजना मानें तो रक्तपात भी न हो, कोशल-नरेश के प्राण भी सुरक्षित रहें और श्रावस्ती का सिंहासन भी आपका हो जाये। इस पर आप विचार करें। मेरा इसमें कोई स्वार्थ नहीं है, तनिक भी नहीं। यदि आप अपनी स्वीकृति दें तो कल संध्याकाल के पहले आप राजा हो सकते हैं——कल संध्याकाल के पहले।

विडूडभ : तुम्हारे शब्दों में सम्मोहित करने की शक्ति है कारायण। मुझे तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार है। लेकिन पिताजी के शरीर पर आघात न हो, किसी प्रकार का रक्तपात न हो।

कारायण : कल आपके पिताजी भगवान तथागत से भेंट करने जायँगे। हम दोनों उनके साथ रहेंगे। चतुरंगिनी सेना साथ चलेगी। उधर आपके पिताजी तथागत के दर्शन करने जायें, इधर सेना के सामने मैं आपके सिर पर राज-मुकुट रख दूँ। सेना मेरा विरोध न करेगी। उसी क्षण आप आकर श्रावस्ती के सिंहासन पर अधिकार कर लें, प्रासाद के प्रवेशद्वारा बन्द करा दें। आप विस्मित होकर मेरी ओर क्यों देख रहे हैं ?

विडूडभ : कारायण, क्या यह काम इतना आसान है ? तुम तो इसे खेल समझ रहे हो।

कारायण : हाँ, यह काम कठिन नहीं है। आप चाहें तो कल संध्याकाल तक श्रावस्ती के सिंहासन पर बैठ सकते हैं।

विडूडभ : कारायण, यदि हमारा प्रयत्न असफल हो गया तो परिणाम क्या होगा ?

कारायण : परिणाम ? हमारा प्रयत्न सफल होगा, असफल नहीं।

विडूडभ : इसकी व्यवस्था तुम करो। मैं जाता हूँ। (प्रस्थान)

कारायण : प्रसेनजित ! तुमने छल से बन्धुल का सर्वनाश किया है। तुम्हारा भी सर्वनाश होगा। (प्रस्थान)

—:o:—

तृतीय दृश्य

स्थान—श्रावस्ती। बौद्ध संघाराम के पास का एक स्थान।

(नेपथ्य में जयनाद हो रहा है। "विडूडभ की जय" और "कोशलराज की जय" के गगनभेदी नारे। विडूडभ और कारायण का प्रवेश। विडूडभ के सिर पर राजमुकुट है। दोनों सशस्त्र हैं।)

कारायण : कोशल-नरेश विडूडभ की जय !

विडूडभ : कारायण, मैं विस्मय से तुम्हारा चातुर्य देख रहा था।

कारायण : आपके पिताजी महारानी के साथ संघाराम में गये हैं। वहाँ तथागत का प्रवचन हो रहा है। उनमें से किसी को भी यह जानने की चिन्ता नहीं है कि बाहर क्या हो रहा है।

विडूडभ : मुझे अब तक यह विश्वास नहीं हो रहा है कि मैं कोशल-राज हूँ।

कारायण : आपके सिर पर राजमुकुट है। सेना आपका जयनाद कर रही है। कारायण की तलवार आपकी सुरक्षा का उत्तर-दायित्व ले चुकी है। फिर आपको विश्वास क्यों नहीं होता ? यदि आप चाहें तो आपके पिता अविलम्ब बन्दी बनाये जा सकते हैं। आपके संकेत पर वे कारागार में भेजे जा सकते हैं।

विडूडभ : नहीं कारायण, मैं इतना निर्दयी नहीं हूँ। वे मेरे पिता हैं। सिंहासन के लोभ में पड़ कर एक कुकर्म तो कर चुका हूँ। पिता के शरीर को कष्ट देकर दूसरा कुकर्म नहीं करूँगा।

कारायण : आपकी इच्छा। मैंने तो आपका ही पक्ष लिया है।

विडूडभ : कारायण, हम दोनों ने विद्रोह किया है। राज्य के नियमों के अनुसार हमें दण्ड मिलना चाहिये।

कारायण : हमारा विद्रोह सफल हुआ है। इसलिए इसे हम विद्रोह की संज्ञा नहीं दे सकते।

विडूडभ : हमें आश्चर्य है कि बिना किसी रक्तपात के हमारी विजय हुई।

कारायण : अब आप शाक्यभूमि पर आक्रमण करके अपने अपमान का प्रतिशोध ले सकेंगे।

विडूडभ : शाक्यगण !—स्मरण आते ही मेरी धमनियों का रुधिर नाचने लगता है। इधर की व्यवस्था ठीक करने के बाद ही मुझे शाक्यों पर आक्रमण करना है।

कारायण : आपकी आज्ञा का पालन किया जायेगा। अब आपके पिता विहार से निकलने ही वाले हैं। क्या आप उनसे भेंट करेंगे ? आपकी माता भी तो उनके साथ होंगी।

विडूडभ : नहीं कारायण, मैं अपने पिता के सामने खड़ा नहीं हो सकूँगा।

कारायण : ठीक है। यह काम भी मुझे ही करना होगा।

विडूडभ : कौन-सा काम ?

कारायण : आपके पिता को स्थिति से अवगत कराना।

विडूडभ : एक बात का ध्यान रखो कारायण। मेरे पिता बन्दी नहीं बनाये जाये और न उनके प्राण लियें जायें। यह आदेश पूरी सेना के लिए है।

कारायण : आपके आदेश का पालन होगा। मैं स्वयं आपके पिता से भेंट करूँगा। आप कहीं छिप जायें।

(विडूडभ का प्रस्थान)

कारायण : लगता है, तथागत का प्रवचन समाप्त हो गया। भिक्षुगण निकल कर बाहर जा रहे हैं। प्रसेनजित इधर ही आ रहा है।

(कुछ देर तक टहलते रहते हैं। प्रसेनजित का प्रवेश)

प्रसेन : कारायण, विडूडभ कहाँ है ?—सेना भी कहीं दिखाई नहीं पड़ती।

कारायण : सेना ? कैसी सेना ?

प्रसेन : यह क्या ? तुम्हारा स्वर कुछ बदला हुआ जान पड़ता है।

कारायण : आपने ठीक समझा। सेना के स्वामी अब आप नहीं रहे।

प्रसेन : मैं नहीं हूँ ? तुम होश में हो ?

कारायण : हाँ महाराज, सेना के स्वामी अब आपके पुत्र हैं।

प्रसेन : (रोष में) कारायण, स्पष्ट बताओ, बात क्या है ?

कारायण : राजकुमार विडूडभ ने आपके सिंहासन पर अधिकार कर लिया है। अब वे ही कोशलदेश के राजा हैं।

प्रसेन : असम्भव ! यह तुम्हारी प्रवंचना है।

कारायण : राजप्रासाद पर भी आपके पुत्र का अधिकार हो चुका है। समस्त सेना उनके साथ है।

प्रसेन : क्या तुम भी उसके साथ हो ?

कारायण : मैं कोशलराज का सेनापति हूँ। जब तक आप कोशलराज थे, मैं आपका सेनापति था अब आपके पुत्र कोशलराज हैं, मैं उनका सेनापति हूँ।

प्रसेन : कारायण, तुम उद्धत की तरह बातें कर रहे हो। मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता।

कारायण : आप मुझे दण्ड भी नहीं दे सकते। जब सर्प के विष की थैली दूर कर दी जाती है, तब उससे कोई भय नहीं होता। आप शक्तिविहीन हैं। आप किसी को भी दण्ड नहीं दे सकते।

प्रसेन : कारायण! क्या तुम मेरी कृपा को भूल गये? बन्धुल की मृत्यु के पश्चात् मैंने तुम्हें इतना ऊँचा पद दिया, क्या उसका.....

कारायण : बन्धुल की मृत्यु नहीं, हत्या कहिये। बन्धुल की हत्या आपने कराई और अपने अपराध की मार्जना करने के लिए आपने मुझे सेनापति का पद दिया।

प्रसेन : बन्धुल की हत्या मैंने कराई--क्या इसका कोई प्रमाण तुम्हारे पास है?

कारायण : प्रमाण?--आपने स्वयं मल्लिका देवी के सम्मुख अपराध स्वीकार किया है।

प्रसेन : हाँ, किया है। तो क्या तुम उसी हत्या का प्रतिशोध ले रहे हो?

कारायण : हाँ, मैं प्रतिशोध ले रहा हूँ।

प्रसेन : विडूडभ कहाँ है?

कारायण : उनसे भेंट करना आपके हित में अच्छा नहीं होगा।

प्रसेन : क्यों?

कारायण : सम्भव है, वे आपको बन्दी बना लें।

प्रसेन : क्या विडूडभ इतना बदल गया? क्या राज्यलोभ में वह पिता पुत्र के सम्बन्ध को भूल जायेगा?

कारायण : राजकुमार का विद्रोह सफल हुआ है। अपनी सत्ता ठीक रखने के लिए वे कुछ भी कर सकते हैं। यदि मेरे विचार से आप सहमत हों तो मैं कुछ कहूँ।

प्रसेन : क्या कहना चाहते हो?

कारायण : आपका कल्याण इसी में है कि आप अविलम्ब कोशलराज्य की सीमा से बाहर चले जायें।

प्रसेन : कारायण, तुमने ही मेरे घर में यह आग लगाई है।

कारायण : महाराज, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। दोषी आप हैं। आपने जब बन्धुल और उसके पुत्रों की हत्या करायी थी, तब आपका न्याय विचार कहाँ था?--जिस प्रकार भी प्रतिशोध लिया जा सकता था, मैंने लिया।

प्रसेन : मैं एक बार रानी से भेंट करना चाहता हूँ।

कारायण : रानी से आप भेंट कर सकते हैं। यदि वे आपके साथ-साथ जाना चाहें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

(प्रस्थान। नतमस्तक, विपरीत दिशा में,
प्रसेनजीत का भी धीरे-धीरे प्रस्थान।
आवेश में विडूडभ का प्रवेश)

विडूडभ : कारायण! कारायण!!

(वार्षभक्षत्रिया का प्रवेश)

विडूडभ : कौन? माँ? अपने विजयी पुत्र का प्रणाम स्वीकार करो।

वार्षभ : कौन है मेरा पुत्र ?

विडूडभ : मैं हूँ—विडूडभ।

वार्षभ : नहीं, तुम मेरे पुत्र नहीं हो। तुम श्रावस्ती के राजा हो। मेरा पुत्र विश्वासघातक नहीं हो सकता।

विडूडभ : प्रत्येक माँ अपने पुत्र की सफलता पर प्रसन्न होती है। मेरी सफलता पर क्या तुम्हें प्रसन्नता नहीं होती ?

वार्षभ : मूर्ख, क्या यह तुम्हारी सफलता है ? अपने पिता को धोखे से राज्यच्युत करना और फिर सिंहासन पर अधिकार कर लेना—क्या यही तुम्हारी सफलता है ? मेरे पति को, राज्य के अधिकारी को, शासन के अधिकार से वञ्चित कर देना—क्या इसीसे मैं प्रसन्न होऊँगी ?

विडूडभ : माँ, मैं तुम्हारा पुत्र हूँ।

वार्षभ : तुमने मेरी कोख को कलंकित किया है, मेरे स्नेह को लज्जित किया है।

विडूडभ : माँ, तुम्हारे हीन वंश में जन्म लेने के कारण पिताजी ने अपमान किया, शाक्यों ने मेरी हँसी उड़ायी। मैं इन्हीं सब का प्रतिशोध ले रहा हूँ।

वार्षभ : तुमने कारायण के कुचक्र में पड़कर अपने घर का सत्यानाश किया है।

विडूडभ : माँ, तुमसे मेरा कोई विरोध नहीं है। पिताजी कोशल देश से बाहर जा रहे हैं। तुम मत जाओ।

वार्षभ : नहीं विडूडभ, मैं अपने पति के साथ ही जाऊँगी।

विडूडभ : तो क्या यह तुम्हारा अन्तिम निश्चय है ?

वार्षभ : हाँ, तुम मेरी चिन्ता न करो। अपनी चिन्ता करो।

(सामने देख कर) देखो, तुम्हारे पिता इधर ही आ रहे हैं। तुम्हारा यहाँ रहना ठीक नहीं है। तुम जाओ।

विडूडभ : मैं जाता हूँ। लेकिन तुम एक बार फिर मेरे प्रस्ताव पर विचार करो।

(प्रस्थान। दूसरी ओर से प्रसेनजित का प्रवेश।)

प्रसेन : रानी ! (गला भर आता है)

वार्षभ : मैं सबकुछ जानती हूँ। लेकिन चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं।

प्रसेन : रानी, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मनुष्य का भाग्य इतना शीघ्र बदल सकता है। विडूडभ ने, मेरे पुत्र ने, ऐसा भयंकर विश्वासघात किया।

वार्षभ : महाराज, क्या आप पहले से कुछ भी नहीं जानते थे ?

प्रसेन : मैं कुछ भी नहीं जानता था। मैं तथागत के दर्शन के लिए तुम्हारे साथ महाविहार में गया था। बाहर विडूडभ, कारायण और मेरे सैनिकगण थे। जब मैं बाहर आया तो केवल कारायण मेरी प्रतीक्षा कर रहा था—मेरे भाग्य-परिवर्त्तन का दुःसम्वाद देने के लिए। मैं प्रासाद की ओर बढ़ा। वहाँ विडूडभ की जय-ध्वनि हो रही थी। मैं हतप्रभ होकर, दूर से, सबकुछ देखता रहा।

वार्षभ : महाराज, अब क्या होगा ?

प्रसेन : समस्त सेना विडूडभ के साथ है। कोशलदेश से बाहर जाकर ही हम कुछ कर सकते हैं।

वार्षभ : आप क्या करेंगे ?

प्रसेन : मैं मगधदेश की राजधानी राजगृह को जाऊँगा। सम्राट् अजातशत्रु से सैन्य-सहायता लेकर श्रावस्ती पर आक्रमण करूँगा।

वार्षभ : क्या मगध-सम्राट् अपनी शत्रुता भूल गये होंगे? उनसे तो आपका युद्ध हुआ था।

प्रसेन : हाँ, लेकिन मैंने अपनी कन्या वजिरा का विवाह अजातशत्रु से किया था। अब शत्रुता का कोई कारण नहीं है। मुझे विश्वास है कि इस संकटकाल में वे अवश्य मेरी सहायता करेंगे। मैं अभी प्रस्थान करता हूँ।

वार्षभ : मैं भी आपके साथ चलूँगी।

प्रसेन : रानी, तुम विडूडभ की जननी हो। वह तुम्हें कष्ट न देगा। तुम यहीं रहो।

वार्षभ : पति के चरणों की धूल मेरे लिए राजमाता के पद से ऊँची है। मैं आपके साथ चलूँगी।

प्रसेन : रानी, हीन जन्म की बातें कहकर मैंने तुम्हारा अपमान किया है। नहीं जानता था कि तुम्हारा हृदय इतना विशाल है। आज सबने मेरा परित्याग किया, केवल तुम मेरे साथ हो।

रानी : संकटकाल में ही पत्नी की परीक्षा होती है। सुख में मैं आपके साथ रही। दुख में भी मुझे ही रहना चाहिये।

प्रसेन : उत्तम! चलो रानी। कोशलदेश के लोगों की आँखों से बच कर, भाग्य की खोज में, हम शीघ्र चलें। जीवन के कष्ट की अनुभूति प्राप्त करें। चलो।

(दोनों का प्रस्थान। यवनिका-पतन)

हुमायूँ की हार

(ऐतिहासिक नाटक)

पात्र-परिचय

हुमायूँ	.....	मुगल सम्राट्
हमीदा	.....	हुमायूँ की बेगम
बैरम ख़ाँ	.....	मुग़ल-सेनापति
शेर ख़ाँ	.....	अफ़ग़ान-नेता
जलाल ख़ाँ, हेमचन्द्र	.....	शेर ख़ाँ के सेनापतिगण
दूत	.....	मेवाड़ का दूत

हुमायँ की हार

प्रथम दृश्य

स्थान — बंगाल में सम्राट् हुमायूँ का शिविर।
काल — प्रभात।

(सम्राट् हुमायूँ मदिरापान कर रहे हैं। सामने नाच हो रहा है।)

हुमायूँ : नाचो, और नाचो।

(इसी बीच आवेश में सिपहसालार बैरम खाँ का प्रवेश। नर्त्तकियों का प्रस्थान)

हुमायूँ : कौन ?

बैरम : जहाँपनाह, मैं हूँ बैरम खाँ। (अभिवादन)

हुमायूँ : बैरम, तुम घबराये हुए क्यों हो ? क्या खबर है ?

बैरम : बुरी खबर है। गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह ने मालवा जीत लिया है और अब उसकी फौज चित्तौर की तरफ कूच कर चुकी है।

हुमायूँ : (सोचने का भाव) हूँ।

बैरम : यह भी खबर मिली है कि बिहार में अफगानों का जोर बढ़ता जा रहा है।

हुमायूँ : बैरम खाँ, मुगलों के सामने हिन्दुस्तान की सभी ताक़तें झुक कर रहेंगी। मेवाड़ के राणा सांगा के नाम से उसके दुश्मन डरते थे। उस सांगा को हमारे मरहूम अब्बा ने कनवा के मैदान में सर किया। मेवाड़ मुगलों के सामने ठहर न सका। पठानों में इतनी ताकत नहीं है कि मुगलों का सामना कर सकें।

बैरम : जहाँपनाह, अफगानों की रहनुमाई कर रहा है शेर खाँ।

हुमायूँ : शेर खाँ ? लगता है, हमने इसका नाम पहले भी सुना है।

बैरम : जहाँपनाह, यह वही खौफनाक जवान है जिसने आगरे में, मरहूम बादशाह बाबर के साथ बैठकर, खाना खाया था। जहाँपनाह भी वहाँ मौजूद थे। छुरी और चम्मच की मदद न लेकर शेर खाँ ने अपनी कटार से गोश्त के टुकड़े काटे थे।

हुमायूँ : याद आया। उसकी हरकत देखकर सभी दरबारी ताज्जुब में थे। लेकिन बेखौफ और खामोश शेर खाँ दस्तरखान के अदब कायदों का ख्याल न करके खाना खा रहा था। अब्बाजान शेर खाँ की तरफ देख रहे थे।

बैरम : उसके बाद मरहूम बादशाह बाबर ने शेर खाँ को अपनी फौज में रख लिया। चन्देरी की लड़ाई हमलोगों ने शेर खाँ की मदद से जीती थी।

हुमायूँ : बैरम, अब्बाजान जब मरने लगे तो उन्होंने दो नसीहतें हमें दीं।

बैरम : दो नसीहतें ? वो क्या जहाँपनाह ?

हुमायूँ : उन्होंने कहा—"बेटा हुमायूँ, अपने भाइयों का ख्याल रखना।" फिर उन्होंने कहा—"उस खौफनाक बेअदब शेर खाँ से खबरदार रहना। उसके मनसूबे बहुत बड़े हैं।" बैरम, हमने अब्बाजान की एक नसीहत पर तो गौर किया, लेकिन दूसरी नसीहत का ख्याल न किया। लगता है, अब काफी देर हो गई।

बैरम : नहीं जहाँपनाह, शेर खाँ को कुचलने के लिये हमलोग काफी हैं। आज काबुल और कन्दहार से सूबे बंगाल तक मुगलों का झंडा फहरा रहा है। पानीपत की लड़ाई के अभी दस साल भी नहीं हुए हैं। इतने कम अरसे में दौलत से भरे इस मुल्क को फतह करना मामूली बात नहीं है।

हुमायूँ : बैरम, हमने बंगाल को फतह किया। सोचा था, कुछ वक्त ऐशोआराम में गुजारें। फौज को भी थोड़ी राहत मिल जाएगी।

बैरम : जहाँपनाह, जंग और ऐशोआराम ये दो ऐसे लफ्ज हैं जिनमें मेल नहीं हो सकता। शायद हम यहाँ वक्त बर्बाद कर रहे हैं।

हुमायूँ : बैरम, इस बात पर बहस करना बेकार है। जंग ही जिन्दगी की सबसे बड़ी चीज नहीं है। मौका मिलने पर इन्सान के लिये ऐशोआराम भी निहायत जरूरी है।

(पहरेदार का प्रवेश। कोर्निश)

हुमायूँ : क्या है ?

पहरेदार : मेवाड़ से एक दूत आया है। जहाँपनाह से भेंट करने का मुश्ताक है।

हुमायूँ : इजाजत है।

(पहरेदार का कोर्निश करके प्रस्थान)

हुमायूँ : बैरम, राज क्या है ? मेवाड़ के राणा से तो मुगलों की जंग हुई है।

(इसी बीच दूत का प्रवेश)

दूत : भारत-सम्राट् के चरणों में मैं सिर झुकाता हूँ।

हुमायूँ : कौन हो तुम ?

दूत : मैं चित्तौर से आ रहा हूँ। रानी कर्णवती का दूत हूँ। रानी ने यह पत्र और यह राखी भेजी है।

बैरम : राखी ? क्या मतलब ?

दूत : पत्र में सभी बातें लिखी हैं।

(हुमायूँ पत्र लेकर पढ़ते हैं। चेहरे पर गम्भीरता छा जाती है।)

बैरम : जहाँपनाह, उस खत में कौन सी बात है ? इस राखी का क्या मतलब है ?

हुमायूँ : बैरम, यह एक अजीब बात है। रानी ने लिखा है कि गुजरात के सुल्तान ने चित्तौर पर हमला किया है। राखी भेजकर उन्होंने मुझे भाई बनाया है और मेवाड़ को बचाने के लिये इल्तिजा की है।

बैरम : हम रानी की बात पर अपनी फौज नहीं भेज सकते। मेवाड़ हमारा दुश्मन है।

दूत : सिपहलासार साहब, रानी ने मुगल-सम्राट् को भाई बनाया है। हिन्दुस्तानी औरत जब किसी को राखी बाँधती है, तो भाई जान देकर भी बहन की रक्षा करता है।

बैरम : तुम सफीर हो। सेयासी मुआमला भाई-बहन के रिश्ते से बहुत ऊपर है। कनवा के मैदान में जहाँपनाह के मरहूम वालिद शाहंशाह बाबर ने रानी के शौहर राणा संग्रामसिंह को शिकस्त दी है। मेवाड़ इस हार को भूलने वाला नहीं है। अगर गुजरात का सुल्तान बहादुरशाह चित्तौर को खत्म कर देता है, तो मेरा काम आसान हो जाता है। सफीर, तुम लौट जाओ।

दूत : सम्राट्, रानी आज मुसीबत में हैं। उन्होंने बहुत सोच-विचार कर राखी भेजी है। गुजरात का सुल्तान कल मुगलिया ताज का भी दुश्मन हो सकता है। रानी ने आपको एक मौका दिया है कि आप उनकी मदद करके राजपूतों को हमेशा के लिए अपने दोस्त बना लें।

बैरम : सफीर, बादशाह यह मुसीबत मोल लेना नहीं चाहते। तुम लौट जाओ।

दूत : सम्राट्!

हुमायूँ : ठहरो सफीर। मेवाड़ की रानी कर्णवती ने हिन्दोस्तान के शाहंशाह हुमायूँ को यह राखी भेजी है। यह धागा नहीं है। भाई-बहन का पाक रिश्ता है। हम रानी के भाई हुए। मुगल फौज चित्तौर की हिफाजत का जिम्मा लेती है। हम अपनी बहन की मदद करेंगे।

बैरम : जहाँपनाह, हम बंगाल में हैं। चित्तौर यहाँ से काफी दूर है। शेर खाँ हमारी गैरहाजिरी से बंगाल और बिहार में फायदा उठायेगा। चित्तौर की मदद करने में बहुत खतरा है।

हुमायूँ : बैरम, हमने चित्तौड़ की मदद करने का फैसला कर लिया है। हम इसके लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी दे सकते हैं। शेर खाँ बंगाल और बिहार को ले ले। हम रानी की राखी की लाज रखने के लिए तख्तोताज भी दे सकते हैं। लेकिन हम तारीख लिखनेवाले को यह मौका देना नहीं चाहते कि बहन ने मदद माँगी और भाई ने मदद नहीं की।

बैरम : लेकिन यह सेयासी मामला--

हुमायूँ : सेयासी मामले से यह रिश्ता बहुत ऊपर है--बहुत ऊपर। सफीर, तुम फौरन जाओ। रानी को कह दो कि वे फिक्र न करें। हम चित्तौर पहुँच रहे हैं।

दूत : सम्राट् की जय हो!

(कोर्निश करके प्रस्थान)

बैरम : जहाँपनाह माफ करें। रानी की मदद करने का जिम्मा लेकर हमलोगों ने अच्छा नहीं किया।

हुमायूँ : बैरम, तुम कैसी बातें करते हो? मुगलों को इसी हिन्दुस्तान की मिट्टी में रहना है। इसलिए अक्लमन्दी इसी में है कि यहाँ के लोगों से हम अच्छे ताल्लुकात रखें। अगर राजपूत हमारे दोस्त हो जायें तो हमें किसी का खौफ नहीं।

(पहरेदार का प्रवेश)

हुमायूँ : क्या है?

पहरेदार : बेअदबी माफ़ हो। अभी-अभी खबर मिली है कि शेर खाँ ने अपने को खुदसर हुक्मरां एलान किया है।

हुमायूँ : बैरम, क्या यह खबर ठीक हो सकती है?

बैरम : शेर खाँ सब कुछ कर सकता है।

हुमायूँ : हमें क्या करना चाहिए?

बैरम : जहाँपनाह ने चित्तौर जाने का बखेड़ा खुद मोल लिया है। बंगाल से चित्तौर तक का रास्ता ठीक नहीं है। वहाँ पहुँचने में काफी वक्त लगेगा। शेर खाँ हमारी गैरहाज़िरी से फायदा उठायगा। बेहतर होगा कि जहाँपनाह मेवाड़ जाने के मुतल्लिक अपना फैसला बदल दें।

हुमायूँ : पहरेदार, तुम जाओ।

(पहरेदार का प्रस्थान)

बैरम : फौज के लिए क्या हुक्म है?

हुमायूँ : बैरम, हम मेवाड़ की तरफ जायेंगे। रानी की मदद करेंगे। हम बहादुरशाह को ज़िन्दा या मुर्दा पाना चाहते हैं। उसके बाद ही हम शेर खाँ का पीछा करना चाहते हैं।

बैरम : उसके बाद फतहयाब शेर खाँ को शिकस्त देना मुश्किल काम होगा।

हुमायूँ : शेर खाँ के फतहयाब होने से हमें कोई अफ़सोस नहीं है बैरम। हम शेर खाँ को शिकस्त दे सकते हैं। मुग़ल खून में अभी वह गरमी बाकी है जिससे दुश्मन पस्त होते हैं। अफ़सोस सिर्फ इस बात का हो सकता है अगर हमलोग वक्त पर मेवाड़ न पहुँच पायें।

बैरम : जहाँपनाह ने आज की हवा का रुख़ नहीं देखा है।

हुमायूँ : मतलब ?

बैरम : मुग़लिया तख्तोताज के हर तरफ दुश्मनों का जाल बिछा है। आपके अपने भाई——

हुमायूँ : अपने भाई ? तुम मिर्जा कामरान के बारे में कुछ कह रहे हो।

बैरम : जहाँपनाह ने मिर्जा कामरान को काबुल और कन्दहार दे दिया था। उन्होंने हमारी फौज के लिए सिपाही भेजना बन्द कर दिया है। इतना ही नहीं, उन्होंने लाहौर पर कब्जा कर लिया है। अब वे दिल्ली लेना चाहते हैं।

हुमायूँ : बैरम, अब्बाजान के लफ्ज अभी भी हमारे कानों के पास गूँज रहे हैं। उनकी नसीहत के मुताबिक ही हमने कामरान, हिन्दाल और अस्करी को अलग-अलग सूबे दिये थे।

बैरम : मुग़ल सल्तनत के पाये कमजोर हो गये हैं जहाँपनाह। जहाँपनाह के भाई अब इस तख्तोताज की तरफ ललचाई आँखों से देख रहे हैं। वे सब जहाँपनाह के दुश्मन हैं।

हुमायूँ : कामरान ! हिन्दाल ! अस्करी ! या खुदा, तुमने हमें भाइयों में बड़ा क्यों बनाया ? अगर हमें बड़ा बनाया तो हमारे भाइयों को इतना खुदगर्ज क्यों बनाया ?

बैरम : जहाँपनाह, हिम्मत से काम लें। मुग़ल सल्तनत का इस वक्त सबसे बड़ा दुश्मन है--शेर खाँ। अगर शेर खाँ

को फौरन दबाया नहीं गया तो वो हमेशा के लिए खतरा बना रहेगा।

हुमायूँ : बैरम खाँ, बहस न करो। कल सुबह हम मेवाड़ की तरफ कूच करेंगे। रानी की मदद करने के बाद हम शेर खाँ के मसले पर गौर करेंगे। जाओ, फौज को तैयार करो।

--:o:--

द्वितीय दृश्य

स्थान— चौसा : शेर खाँ का खेमा।

समय—रात।

(शेर खाँ और उसके सेनापति जलाल खाँ बातें कर रहे हैं।)

शेर खाँ : फिर क्या हुआ जलाल खाँ ?

जलाल : हुजूर, बादशाह हुमायूँ के चित्तौर पहुँचने के पहले गुजरात के सुल्तान ने वहाँ फतहयाबी हासिल कर ली थी। राजपूत सिपाही एक-एक कर कट मरे थे। औरतें आग में जल मरी थीं। बादशाह के पहुँचने की खबर सुनकर सुल्तान बहादुरशाह भाग गये। हुमायूँ ने चित्तौर की गद्दी पर राणा को फिर बैठाया।

शेर खाँ : गुजरात के सुल्तान का क्या हुआ ?

जलाल : सुल्तान बादशाह के डर से भागते रहे। फिर पुर्त्तगालियों के जहाज में छिप गये। बादशाह ने मालवा और गुजरात को फतह किया, और तब हमलोगों की तरफ बढ़े।

शेर खाँ : बादशाह हुमायूँ इन्सान की शक्ल में फ़रिश्ता है। राखी की लाज रखने के लिये उन्होंने अपनी सल्तनत दाँव पर लगा दी। अगर वे उधर नहीं जाते तो मैं फ़तहयाब नहीं होता। शाही लश्कर का मुकाबला करना मेरे लिये मुमकिन नहीं था।

जलाल : लेकिन हुजूर, क्या कोई हुक्मराँ ऐसी गलती कर सकता है ?

शेर खाँ : बादशाह हुमायूँ की ग़लती कोई हुक्मराँ नहीं कर सकता——यह ठीक है। लेकिन इन्सानियत की यह एक बहुत बड़ी मिसाल है। हम ऐसे इन्सान की क़द्र करते हैं।

जलाल : हुजूर, खबर मिली है कि बादशाह हुमायूँ एक बहुत बड़ी फौज के साथ इधर चले आ रहे हैं।

शेर खाँ : फिक्र न करो जलाल खाँ। लगता है कि इसी जगह हिन्दुस्तान की किस्मत का एक बार फिर फैसला होगा। गंगा के किनारे बसा यह 'चौसा' तारीख में एक खास नाम रखेगा। हम यहीं पर शाही लश्कर का मुकाबला करेंगे।

जलाल : सरदार, मुग़ल फौज हमारे मुकाबले में बहुत है। हम शाही फौज का मुकाबला करके फतहयाब होंगे——इसमें शक है।

शेर खाँ : खामोश। शेर खाँ का जोश ठण्डा न करो जलाल। हम मादरेवतन के लिए यह जंग कर रहे हैं। सारी हिन्दुस्तानी ताकत हमारे साथ है। बादशाह हुमायूँ की फौज दूर से आ रही है। काफी थकी है। उधर आगरे पर उनके भाई हिन्दाल ने कब्जा कर लिया है। कामरान लाहौर में है और दिल्ली के तख्त पर उसकी आँखें लगी हैं। मुगल सल्तनत के पाये कमजोर हो गये हैं। एक धक्के की जरूरत है। फिर बाबर की कायम की हुई मुगल सल्तनत की यह दीवार मिसमार हो जायेगी।

जलाल : हुजूर, सभी अफगान आपसी दुश्मनी को भूल कर आज आपके झण्डे के नीचे खड़े हैं।

शेर खाँ : हिन्दुस्तानियों में मिल्लत नहीं थी, इसी से बाबर को फतहयाबी मिली। आज हम एक हैं, तो हम इन लोगों को शिकस्त दे सकेंगे। हिन्दुस्तानी तलवार पर काई नहीं जमी है। तय है कि मुगल हुकूमत हम खत्म करके रहेंगे।

जलाल : लेकिन हुजूर, हम शाही फौज का मुकाबला नहीं कर सकते।

शेर खाँ : अभी हम यह मुकाबला करना भी नहीं चाहते। हमारी फौज जानबूझ कर शाही फौज से उलझना नहीं चाहती। शाही फौज जब थक कर चूर हो जायेगी, तब हम उस पर टूट पड़ेंगे। शाही फौज जहाँ तक बढ़ सके, बढ़ने दो।

जलाल : मैं हुजूर की बात समझ न सका।

शेर खाँ : जलाल खाँ, हम मुगल फौज के लड़ने के तरीके जानते हैं। हमने बाबर के साथ रह कर मुगलों की ताकत का अन्दाज कर लिया है। हम हुमायूँ को शिकस्त दे सकेंगे--ऐसा हमारा पक्का यकीन है।

जलाल : ताज्जुब है! हिन्दुस्तान के बादशाह का मुकाबला कोई मामूली इंसान नहीं कर सकता।

शेर खाँ : जलाल; मैं एक इंसान हूँ--मामूली इंसान। लेकिन मैं हिम्मत और मिहनत में यकीन करता हूँ। मेरी फतहयाबी का राज यही है। खुदा हमारा मददगार है।

जलाल : सरदार, इब्राहिम लोदी ने पानीपत के मैदान में जो कुछ खोया, हुजूर उसे हासिल करेंगे।

शेर खाँ : लगता है, यही पाक परवरदिगार की मर्जी है। अच्छा जलाल खाँ, तुम जाओ। शाही फौज का इन्तेजार करो। सेनापति हेमचन्द्र को भेज दो।

(जलाल सलाम करके जाता है। शेर खाँ टहलते रहते हैं। सेनापति हेमचन्द्र का प्रवेश।)

हेमचन्द्र : (अभिवादन करके) क्या हुजूर ने मेरी याद की है?

शेर खाँ : हाँ हेम, शाही लश्कर कहाँ है?

हेम : शाही लश्कर आ गया है। गंगा के किनारे उसके खेमे लगे हैं।

शेर खाँ : हेम, फौज तैयार रखो। हमारा ईशारा मिलते ही हमला करो। याद रखो, इस जंग पर हिन्दुस्तान की किस्मत बदल सकती है। हमें लड़कर फैसला कर लेना है कि हिन्दुस्तान की हुकूमत किसके हाथ में रहेगी।

हेम : हम तैयार हैं सरदार। शाही फौज पर हम बिजली बनकर टूट पड़ेंगे।

शेर खाँ : शाबाश। लेकिन एक बात जान लो। हम मुगल सल्तनत के दुश्मन हैं, हुमायूँ की जान के नहीं। हम हुमायूँ की जान लेना नहीं चाहते। इसलिए हमारी फौज का कोई सिपाही बादशाह को हाथ में पाकर भी न मारे। अगर हुमायूँ का खून हमारी फौज के किसी आदमी ने किया तो शेर खाँ का वह सबसे बड़ा दुश्मन होगा।

हेम : ऐसा क्यों सरदार?

शेर खाँ : हेम, तुम नहीं जानते। हुमायूँ की इन्सानियत बहुत ऊँची है।

हेम : मेरे लिए क्या हुक्म है?

हुमायूँ : हेम, आदमी भेजकर यह पता लगाओ कि शाही फौज कितनी है और बादशाह की मंशा क्या है।

हेम : जो हुक्म। (प्रस्थान)

—:o:—

तृतीय दृश्य

स्थान— चौसा। शाही खेमे का एक भाग।

समय— रात।

(बादशाह हुमायूँ बैठे हैं। सामने बैरम खाँ खड़े हैं दोनों चिन्तित हैं। घनगर्जन)

हुमायूँ : लगता है, क़यामत आ गई। इधर की बरसात तो और भी खतरनाक है। बैरम, शेर खाँ ने क्या जवाब दिया?

बैरम : जहाँपनाह, शेर खाँ कहता है कि बादशाह ने हमारे साथ बहुत जुल्म किये, हमें कमजोर पाकर बार-बार सताया, आज जब वे अपनी शिकस्त सामने देख रहे हैं तो सुलह करना चाहते हैं।

हुमायूँ : शेर खाँ को शायद हमारी कमजोरी का पता चल गया है। हिन्दुस्तान के बादशाह ने आज तक किसी के सामने सुलह का हाथ न बढ़ाया था। बदतमीज शेर खाँ ने हमारी तौहीन की है।

बैरम : आलमपनाह, सुलह की कोई जरूरत नहीं है। हम जंग के लिये तैयार हैं।

हुमायूँ : लेकिन हम शेर खाँ का मुक़ाबला कैसे कर सकेंगे? हमने फौज का एक बहुत बड़ा हिस्सा आगरे भेज दिया है। जो लोग यहाँ हैं, उनमें ज्यादातर लोग बीमार हैं। वे लड़ नहीं सकते। हम क्या करें?

बैरम : जहाँपनाह, फिर कहता हूँ ये सब मुसीबत हमने खुद मोल ली है। उस बार न हम चित्तौर जाते, न शेर खाँ की हिम्मत बढ़ती।

हुमायूँ : बैरम, हमें उस बात का बिलकुल अफसोस नहीं है। वह हमारा फर्ज था।

बैरम : नहीं आलमपनाह, वह फर्ज नहीं, जजबात थे।

हुमायूँ : बैरम खाँ, तुम बेअदब हो रहे हो। शाहंशाहे हिन्दुस्तान से इस तरह बातें करना अच्छा नहीं लगता।

बैरम : जहाँपनाह, मैं बेअदब नहीं हूँ। लेकिन आज जब शेर खाँ हमारे सामने इस तरह खड़ा है तो हमें मरहूम बादशाह बाबर के अल्फाज याद आ जाते हैं। उन्होंने मरते वक्त कहा था—'बैरम, शाहजादे हुमायूँ का जिम्मा तुम्हारे ऊपर छोड़ कर मैं जा रहा हूँ।' मैंने उन्हें कहा था कि आपकी इज्जत, हार-जीत, सब का जिम्मेदार मैं रहूँगा। चित्तौर जाकर आपने अपने तख्तोताज को दांव पर लगा दिया, और यह मेरे रहते हुआ। क्या मरहूम बादशाह की रूह मुझे माफ कर सकेगी?

हुमायूँ : बैरम, तुम हमें बहुत अजीज हो। हम तुम्हारी नेक राय लेकर ही सब कुछ करते रहे। चित्तौर के मामले में हमने गलत किया या सही—इसका फैसला पीछे होगा। लेकिन लगता है कि अगर इसके लिये तख्तो-ताज भी खोना पड़े तो जरूरत पड़ने पर फिर हम ऐसा ही करेंगे।

(दूर से रणघोष)

हुमायूँ : (चौंक कर) ये क्या?

बैरम : शायद इस अन्धेरी रात में शेर खाँ ने हम पर हमला किया है।

हुमायूँ : बैरम, ये कैसी बात है ? सुलह की बात चल रही है। इस बीच हमला ?

बैरम : शेर खाँ सब कुछ कर सकता है। जहाँपनाह फिक्र न करें। हम शेर खाँ से जंग करेंगे।

(रणघोष बहुत निकट)

बैरम : जहाँपनाह, मैं बाहर जा रहा हूँ। मेरी इल्तिजा है, खेमे से दूर चले जायें। (प्रस्थान)

हुमायूँ : या खुदा ! अब क्या होगा ? बेगम ! बेगम ! शायद दुश्मनों ने बेगम का खेमा घेर लिया है।

(सावेश में हेमचन्द्र का, सैनिकों के साथ, प्रवेश)

हुमायूँ : कौन ?

हेम : मैं हूँ हेमचन्द्र—शेर खाँ का एक सेनापति। क्या आप ही बादशाह हैं ?

हुमायूँ : बदतमीज ! बादशाह हुमायूँ को पहचानना क्या मुश्किल है ?

हेम : बादशाह से मेरी इल्तिजा है कि वे खेमे के बाहर चले जायें।

हुमायूँ : हेम, तुम्हारी ऐसी जुर्रत ? अरे कोई है ? इस बदमाश को कैद कर लो।

हेम : बादशाह सलामत की फौज तितर-बितर हो गई है। हुजूर की शिकस्त होगी। अगर जहाँपनाह अपनी जान बचाना चाहते हैं तो जल्द भाग जाएँ।

हुमायूँ : यह नहीं हो सकता। तलवार हमारे हाथ में है। जंग करो। बाबर का बेटा बुज़दिल नहीं कि मैदानेजंग से भाग जाये।

हेम : जहाँपनाह की जान खतरे में है। मैं हुजूर पर हाथ उठाना नहीं चाहता।

हुमायूँ : आखिर क्यों ?

हेम : शेर खाँ का यही हुक्म है कि बादशाह की जान न ली जाये।

हुमायूँ : हम शेर खाँ के दुश्मन हैं हेम। हमें ऐसे रहम की जरूरत नहीं।

हेम : दुरुस्त। लेकिन शेर खाँ मुगल सल्तनत के दुश्मन हैं, हुजूर की जान के नहीं। देर न करें जहाँपनाह। अफगान फौज आपके खेमे में आग लगा रही है। आप कैद कर लिये जायेंगे। जान बचाकर आप फिर जंग कर सकते हैं। खेमे के बाहर मेरा घोड़ा तैयार है। आप उस पर सवार होकर किसी तरह गंगा के उस पार चले जायें।

हुमायूँ : हेम, शेर खाँ ने हम पर धोखे से हमला किया है। यह रहम उसका नहीं, तुम्हारा है। हम ऐसा रहम नहीं चाहते।

हेम : जहाँपनाह, शेर खाँ की फौज का एक भी सिपाही आप पर हाथ नहीं उठायेगा। हाँ, आप कैद कर लिये जायेंगे। वो आपके लिए, सल्तनतेमुगलिया के लिए, गैरत की बात होगी। आप बाहर जाकर नई फौज ला सकते हैं, फिर जंग कर सकते हैं। आप मेरी सलाह मानें। गंगा के उस पार चले जायें।

हुमायूँ : हेम, हम तुम्हारे शुक्रगुजार हैं। तुमने हमें लड़ने का एक और मौका दिया है। शायद खुदा को यही पसन्द है। आज मुगल तख्तोताज की हर तरफ दुश्मन लगे हैं। हमारे अपने भाई तक दुश्मन हो गये। खैर, जाता हूँ। खुदा हाफिज !

(हुमायूं का प्रस्थान। दूसरी ओर से शेर खाँ का प्रवेश। हाथ में नंगी तलवार है। हेमचन्द्र सलाम करता है।)

शेर खाँ : बादशाह कहाँ हैं ?

हेम : भाग गये।

शेर खाँ : चलो, अच्छा हो हुआ। बादशाह को हम कैद करना नहीं चाहते थे।

हेम : हुजूर, जंग खत्म हो गई और आपकी फतह हुई।

शेर खाँ : चौसा की इस लड़ाई ने सचमुच हिन्दुस्तान की किस्मत का फैसला कर दिया। मुगल सल्तनत का खात्मा हो गया।

हेम : सरदार, हम आपकी इस, फतहयाबी पर मुबारकबाद देते हैं। आज से आप हिन्दुस्तान के बादशाह हैं।

शेर खाँ : हेम, अभी हमारा काम पूरा नहीं हुआ है। मुमकिन है कि दिल्ली के तख्त पर बैठने के पहले शायद एक और जंग करनी पड़े।

(जलाल खाँ का प्रवेश। साथ में बुर्के के अन्दर बेगम हमीदा बानू। जलाल कोर्निश करते हैं।)

शेर खाँ : हम तुम्हारी बहादुरी से खुश हैं जलाल। लेकिन तुम्हारे साथ यह कौन है ?

जलाल : एक तोहफा हिन्दुस्तान के नये शाहंशाह के लिए।

शेर खाँ : तोहफा ? यह तो कपड़ों में लिपटा कोई इन्सान है। इसके मुँह का कपड़ा तो हटाओ।

हमीदा : शेर खाँ, इसके लिए जलाल खाँ को कहने की जरूरत नहीं है।

(मुँह पर का कपड़ा खुद हटाती है)

शेर खाँ : कौन ?

जलाल : जहाँपनाह ये बादशाह हुमायूँ की बेगम हमीदा बानू हैं।

शेर खाँ : (चौंककर) जलाल खाँ !

जलाल : (भयभीत स्वर) : जहाँपनाह ! खता माफ हो।

शेर खाँ : ये तुमने क्या किया जलाल खाँ ?

हमीदा : शेर खाँ, जलाल खाँ का इसमें कोई कुसूर नहीं है। तुम्हारे हुक्म से इसने मुझे कैद किया है और तुम्हारे रूबरू पेश किया है। मैं एक तोहफा हूँ न ?

शेर खाँ : मलेका, हम शर्मिन्दा हैं। जलाल खाँ ने हमारे मुँह पर तमाचा मारा है।

हमीदा : शेर खाँ, यह किस्मत की बात है। किसी रोज़ तुम हाथ बाँधे मरहूम बादशाह बाबर के दरबार में खड़े थे। आज हिन्दुस्तान के शाहंशाह हुमायूँ की मलेका तुम्हारे रूबरू एक कैदी बनाकर लाई गई है। तुम्हारे सिपाहियों ने मुग़ल खेमे में काफी लूटमार की है। उसी लूट का हिस्सा मैं हूँ।

शेर खाँ : मलेका, आप ग़लत न समझें। हमारे सामने आप महफ़ूज़ हैं। हम मुग़ल सल्तनत के दुश्मन हैं, लेकिन आपकी इज्ज़त और आबरू के नहीं। हिन्दुस्तान में औरतों की इज्ज़त मर्दों से ज्यादा है। हम अपनी ग़लती के लिए आपसे माफी माँगते हैं।

हमीदा : शेर खाँ, यह ग़लती नहीं है। लड़ाई में ऐसा ही होता है। तुमने शाहंशाह से तख्तोताज छीना। अगर हमीदा बानू को भी तुमने छीन लिया तो अपने लायक ही काम किया।

शेर खाँ : मलेका शायद हमारी ईमानदारी का कोई बड़ा सबूत चाहती हैं। जलाल खाँ ने आपकी जो बेइज्ज़ती की है, उसके लिए हम गुनहगार हैं। यह कटार लीजिये और हमें सज़ा दीजिये।

हमीदा : (आश्चर्यचकित) शेर खाँ !

शेर खाँ : मलेका, हमारा यकीन कीजिये। मुग़ल सल्तनत का सबसे बड़ा दुश्मन आपके सामने खड़ा है। कटार मेरे सीने में भोंक दीजिये।

हमीदा : शेर खाँ, मैं तुम्हारा यकीन करती हूँ। कटार वापस लो। अब मेरी एक इल्तिजा है।

शेर खाँ : हुक्म कीजिये मलेका।

हमीदा : इस कटार से तुम मेरा खून कर दो।

शेर खाँ : सबब ?

हमीदा : चौसा की लड़ाई में बादशाह शायद मारे गये। उनका कुछ पता नहीं है। उनके बिना मैं ज़िन्दा नहीं रह सकती।

शेर खाँ : बादशाह ज़िन्दा हैं मलेका।

हमीदा : ज़िन्दा हैं ?

शेर खाँ : हाँ, हमने जान-बूझकर उन्हें छोड़ दिया है। वे गंगा पार करके आगरे की तरफ़ गये हैं। आप अगर चाहें तो हम अपने सिपाहियों की देख रेख में आपको आगरे भिजवा दें।

हमीदा : शेर खाँ, मुझे आगरे भिजवा दो। यह तुम्हारा बहुत बड़ा एहसान होगा। शेर खाँ, इस औरत की दुआ तुम्हारे साथ रहेगी। काश, शाहंशाह जान पाते कि शेर खाँ की कीमत क्या है।

शेर खाँ : हेमचन्द्र !

हेम : हुक्म सरदार !

शेर खाँ : मलेका की खातिरदारी हम तुम्हें सौंपते हैं। इन्हें आगरे भेजने का बन्दोबस्त करो। मलेका, तब तक आप आराम फरमायें।

हमीदा : शेर खाँ, आज मुझे मालूम हुआ कि तुम कितने अजीम हो। बादशाहत का होना या न होना अलग चीज़ है, लेकिन उससे जो बड़ी चीज़ है लियाक़त—वो तुम्हारे पास है। तुम मेरे दुश्मन हो, लेकिन इस फ़तहयाबी के लिए मैं भी तुम्हारा इस्तक़बाल करती हूँ।

(शेर खाँ सिर झुका लेते हैं। धीरे-धीरे यवनिका-पतन)

—:o:—

झेलम के किनारे

(मुग़लकालीन ऐतिहासिक नाटक)

पात्र-परिचय

जहाँगीर	...	...	भारत-सम्राट्
नूरजहाँ	...	...	भारत-सम्राज्ञी
महावत खाँ	...	...	सम्राट् के एक सेनापति
संग्राम सिंह	...	...	महावत के सेनानायक
शहरयार	...	...	जहाँगीर के पुत्र
आसफ़	...	...	सम्राट् के वज़ीर और नूरजहाँ के भाई

झेलम के किनारे

प्रथम दृश्य

स्थान--लाहौर। शाही महल का एक भाग।

(एक सजे कमरे में, पलंग पर, तकिये के सहारे सम्राज्ञी नूरजहाँ अधलेटी है। किसी के आने की आहट होती है।)

नूरजहाँ : कौन ?

आसफ : (आते हुए) मैं हूँ--वज़ीर आसफ खाँ।

नूरजहाँ : आसफ ? क्या बात है ?

आसफ : बुढ़ानपुर से यह खत आया है--शाहंशाह की खिदमत में महावत खाँ ने भेजा है।

नूरजहाँ : मज़मून क्या है ?

आसफ : महावत ने मलेका की नाफरमानी की है।

नूरजहाँ : क्या मतलब ?

आसफ : मलेका ने महावत खाँ का तबादला बंगाल किया था। लेकिन महावत खाँ बंगाल जाने को तैयार नहीं है।

नूरजहाँ : सबब ?

आसफ : साथ में एक खत शाहजादा परवेज का भी है। वे महावत खाँ को अपने साथ रखना चाहते हैं।

नूरजहाँ : बागी शाहजादे खुर्रम को इन दोनों ने मिल कर शिकस्त दी है। मुमकिन है कि इनके दिमाग में गुरूर भर गया हो। मैं जानती हूँ इस फतह के बाद शाहजादा परवेज की निगाह हिन्दुस्तान के तख्तोताज पर है।

आसफ : मलेका, शाहजादे खुर्रम के खिलाफ यह एक बहुत बड़ी साजिश थी जिसमें उनकी हार और परवेज की जीत हुई। शाहजादा खुर्रम शाहंशाह के लायक लड़के हैं।

नूरजहाँ : (व्यंग में) खुर्रम ने अपनी लियाकत का बड़ा अच्छा सबूत दिया है। क्यों आसफ ? दक्कन की फतेहयाबी पर खुश होकर शाहंशाह ने शाहजादे खुर्रम को शाहजहाँ का खिताब दिया। बगल में बैठने के लिए जगह दी। लेकिन उसका बदला शाहजादे ने किस तरह दिया, यह आज हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा जानता है। तख्तोताज की हवस में शाहजादे ने बगावत का झण्डा बुलन्द किया। दक्कन की रियासत, राजपूताना, उड़ीसा, बंगाल और बिहार में उसने जो लूटमार मचायी, वह क्या तुमसे छिपी है ?

आसफ : शाहजादे को पहिचानने में मलेका ने गलती की है।

नूरजहाँ : खामोश आसफ। खुर्रम तुम्हारा दामाद है। इसीसे तुम बार-बार उसकी तरफदारी कर रहे हो। लेकिन भूलो मत कि सल्तनतेमुगलिया के तुम वजीर हो। एक बागी के लिये तुम्हारे दिल में कोई हमदर्दी नहीं होनी चाहिए।

आसफ : जो हुक्म मलेका।

नूरजहाँ : आसफ, महावत खाँ को लिख भेजो कि उसका बंगाल का तबादला मन्सूख किया जाता है। वह फौरन शाही दरबार में हाजिर हो। शाहजादा परवेज को लिख भेजो कि वह खुद बुढ़ानपुर में ठहरे और महावत खाँ को फौरन भेज दे। कोई वजह नहीं कि महावत उसके साथ-साथ रहे। दोनों फरमान आज ही रवाना किये जायें।

आसफ : जो हुक्म मलेका।

नूरजहाँ : और आसफ, हमने सुना है कि बंगाल और बिहार में बागी खुर्रम के बहुत से हाथी महावत को मिले हैं। ये हाथी अब तक दरबार में भेजे नहीं गये। महावत खाँ अपनी कैफियत के साथ ये हाथी लाहौर रवाना कर दे। हुक्मनामे में इसका जिक्र भी होना चाहिए।

आसफ : मलेका, मेरी इल्तिजा है कि महावत खाँ को और न छेड़ा जाये। वह इस तौहीन को बर्दाश्त न कर सकेगा। खत भेजने के पहले इस पर अच्छी तरह गौर कर लेना मुनासिब होगा।

नूरजहाँ : आसफ, नूरजहाँ हिन्दुस्तान की मलेका है और महावत खाँ एक सिपहसालार। हुक्म देने के पहले हम इतना सोचना फिजूल समझते हैं।

आसफ : महावत कोई अदना इन्सान नहीं है मलेका। तख्तेमुगलिया का वह एक मजबूत पाया है। वह एक ऐसा

पहाड़ है जिससे शाहंशाहेहिन्दुस्तान भी टकराना नहीं चाहते।

नूरजहाँ : और उस पहाड़ को अपने पैरों से कैसे रौंदा जा सकता है, नूरजहाँ यही शाहंशाहेहिन्दुस्तान को दिखाना चाहती है।

आसफ : मलेका इसके मोतल्लिक शाहंशाह से भी मशवरा कर लें तो अच्छा रहेगा।

नूरजहाँ : (खूब गम्भीर स्वर में) आसफ, तुम वजीर न होकर मेरे भाई बनने की कोशिश करते हो। यह गलती तुम बार-बार कर रहे हो।

आसफ : मैं मलेका का भाई हूँ। इसी ख्याल से कभी-कभी ऐसी गुस्ताखी कर बैठता हूँ।

नूरजहाँ : आसफ, मेहरुन्निसा को भूल जाओ। तुम मेहरुन्निसा के भाई थे, नूरजहाँ के नहीं। बहन-भाई का वह रिश्ता खत्म हो गया। सियासत के मामले में जज्बात को न लाओ। अब तुम जा सकते हो।

आसफ : जो इर्शाद। (प्रस्थान)

नूरजहाँ : महावत! तुमने शाही ताकत को चुनौती दी है। परवेज की मदद करके तुम उसे तख्तोताज का वारिस बनाना चाहते हो। यह नामुमकिन है। नूरजहाँ की चाल के आगे तुम्हें मात खानी होगी।

(टहलने लगती है। सम्राट् जहाँगीर का प्रवेश)

जहाँगीर : मरहबा! नूरजहाँ, माबदौलत तुम्हारी अक्ल को दाद दिये बगैर नहीं रह सकते।

(नूरजहाँ कोर्निश करती है)

नूरजहाँ : आलमपनाह, बन्दी से कौन-सी खता हुई?

जहाँगीर : खता? (हँसी) खूब! तुममें इतनी लियाकत है—यह माबदौलत पहले से जानते थे। मेहरुन्निसा को नूरजहाँ का खिताब देकर हमने गलती नहीं की। आज सारा हिन्दुस्तान तुम्हारे कदमों पर झुका है।

नूरजहाँ : बन्दी आलमपनाह की खुशी के लिये अपनी जान तक दे सकती है। लेकिन हुजूर के इस तन्ज का मतलब मैं नहीं समझ सकी।

जहाँगीर : मलेका, तुमने खुर्रम की बगावत को दबाया। महावत खाँ जैसे शेर को अपने पिंजरे में बन्द किया। ये क्या मामूली बातें हैं?

नूरजहाँ : जहाँपनाह ने बन्दी की हद से ज्यादा तारीफ कर दी। खुर्रम की बगावत महावत खाँ ने दबाई है और उसने इसी गुरूर पर शाही ताकत को भी ललकारा है।

जहाँगीर : ललकारा है?—नहीं मलेका। महावत खाँ बड़ा वफादार इन्सान है। मुगल हुकूमत का वह एक मजबूत पाया है।

नूरजहाँ : तो क्या जहाँपनाह उसे माफ कर देंगे?

जहाँगीर : माफी? किस कुसूर की?

नूरजहाँ : महावत खाँ ने नाफरमानी की है। उसे बंगाल की सूबेदारी दी गई थी। लेकिन वह शाहजादा परवेज को छोड़ने को तैयार नहीं है।

जहाँगीर : इसमें क्या फर्क पड़ता है ? परवेज को उससे बहुत कुछ सीखना है। महावत को अभी परवेज के साथ ही रहने दो।

नूरजहाँ : जहाँपनाह, महावत खाँ ने हुक्म न मान कर मेरी तौहीन की है—हिन्दुस्तान की मलेका की तौहीन की है—शाहँशाह की दिलरुबा की तौहीन की है। क्या यह मामूली बात है ? क्या आप इसे यों ही खत्म कर देंगे ?

जहाँगीर : महावत खाँ एक अदना सिपाही नहीं है नूरजहाँ। उसने मुगल सल्तनत फैलाने में काफी मदद की है।

नूरजहाँ : मैं जानती हूँ। शायद इसीसे जहाँपनाह उसे कुछ नहीं कहना चाहते।

जहाँगीर : क्या तुम भूल गईं कि जिस मेवाड़ को फतेह करने के लिये हमारे मरहूम अब्बाजान ने पच्चीस साल तक कोशिश की और फिर भी राणा को झुका न पाये, उसी को महावत खाँ ने जीत कर मुगल सल्तनत की शान बढ़ा दी ? आज मेवाड़ के राणा हमारे मातहत हैं। मावदौलत महावत खाँ के इस एहसान को भूल नहीं सकते।

नूरजहाँ : (व्यंग से) बादशाह सलामत सिर्फ नूरजहाँ की तौहीन को भूल सकते हैं। ठीक है, महावत खाँ के एहसान मेरी तौहीन से बहुत ऊपर हैं। मैंने उल्टा समझा था। आलमपनाह के सामने बन्दी नाचीज है।

जहाँगीर : जानेमन, तुम क्या कहती हो ? क्या तुम्हें मावदौलत से इत्तेफाक नहीं ?

नूरजहाँ : (भर्राई आवाज में) इत्तेफाक है आलमपनाह—इत्तेफाक है। (रो पड़ती है)

जहाँगीर : ये क्या ? तुम रो रही हो ? नूरजहाँ, तुम क्या चाहती हो ? बताओ।

नूरजहाँ : कुछ नहीं।

जहाँगीर : (प्यार से) बताओ न !

नूरजहाँ : अगर जहाँपनाह को बन्दी से कुछ भी मुहब्बत है तो अपना यह फैसला वापस ले लें। महावत खाँ से मैं समझ लूँगी।

जहाँगीर : मलेका, हुकूमत मैंने तुम्हें दे दी है। लेकिन एक बात समझ लो। महावत खाँ से टकराना अच्छा न होगा। आगे तुम जानो, तुम्हारा काम जाने। हाँ, एक बात। हमने काबुल जाने का फैसला किया था सेहत बदलने के ख्याल से। उधर ही से कश्मीर जाने का भी इरादा था। तुम जानती हो, लाहौर अब हमें अच्छा नहीं लगता।

नूरजहाँ : आलमपनाह के हुक्म की देर है। जब कहें, कूच की तैयारी की जाये।

जहाँगीर : आज के तीसरे रोज।

नूरजहाँ : ऐसा ही होगा आलमपनाह।

जहाँगीर : तो आसफ खाँ को खबर कर दो कि सफर का इन्तेजाम वह कर दे।

नूरजहाँ : जो हुक्म।

(दोनों का विपरीत दिशाओं में प्रस्थान)

द्वितीय दृश्य

स्थान—लाहौर के पास महावत खाँ का सैन्यशिविर।
समय—दोपहर।

(महावत खाँ और उनके सेनानायक संग्रामसिंह बातें कर रहे हैं)

महावत : संग्रामसिंह, लाहौर शहर की शान में कमी कैसे आ गई? तुमने शाहंशाह को मेरे आने की खबर कर दी थी?

संग्राम : खाँ साहब, शाहंशाह मय मलेका नूरजहाँ और वजीर आसफ खाँ के काबुल के दौरे पर रवाना हो गये हैं उधर ही से वे सब कश्मीर जायेंगे। यही सबब है कि लाहौर शहर सूना है।

महावत : हुँ। (कुछ ठहर कर) नूरजहाँ जानती थी कि मैं लाहौर पहुँचूँगा और शाहंशाह से सभी बातें कहूँगा। इसीसे मेरे पास फरमान भेज कर उसने शाही सवारी काबुल की तरफ भेज दी। अफसोस! मैं कुछ पहले न पहुँच सका।

संग्राम : आपके सिपाही हुक्म का इन्तेजार कर रहे हैं।

महावत : संग्रामसिंह, शाही फरमान के मुताबिक हाथियों को यहीं छोड़ दो और फौज को आगे बढ़ने का हुक्म दो।

संग्राम : मतलब?

महावत : मुझे बादशाह से मुलाकात करनी ही होगी। लाहौर वापस लौटने में उन्हें कई महीने लग सकते हैं। मैं उतना इन्तेजार नहीं कर सकता। मैं बादशाह का पीछा करूँगा। जहाँ मिलेंगे, वहीं भेंट करूँगा। जितनी तेजी से शाही फौज आगे गई है, उससे दूनी तेजी से हम आगे बढ़ेंगे और उसे पकड़ लेंगे।

संग्राम : खाँ साहब, लाहौर शहर सूना पड़ा है। शाही फौज काफी दूर है। आप इस शहर पर आसानी से कब्जा कर सकते हैं। बगावत का एलान यहीं करके आगे बढ़ना अच्छा रहेगा।

महावत : बगावत? (कुछ हँस कर) मैं खुर्रम नहीं हूँ संग्राम सिंह। मुझे मुगल तख्त की हवस नहीं है। बादशाह से मेरी कोई दुश्मनी भी नहीं है। मुझे सिर्फ नूरजहाँ से बदल लेना है। उसे यह बताना है कि महावत खाँ की ताकत से टकराना हँसी-खेल नहीं। उस औरत ने बार-बार मेरी तौहीन की है। मेरी बग़ावत बादशाह के सामने होगी, पीछे नहीं।

संग्राम : आपकी बातें समझनी मुश्किल है खाँ साहब।

महावत : (कुछ हँस कर) बिल्कुल दुरुस्त! मैं नूरजहाँ की चाल को अच्छी तरह समझ गया हूँ। उसने अपनी खूब-सूरती से बादशाह को जीत लिया है और सल्तनत की बागडोर अपने हाथ में कर ली है। चुन-चुन कर लोगों को अपनी राह से हटा रही है।

संग्राम : क्या मतलब?

महावत : बादशाह के सबसे बड़े लड़के खुसरो को कैद कराकर अन्धा बना दिया। खुर्रम की बगावत को दबाने के लिए मुझे भेजा। अब वह मुझे खत्म करना चाहती है।

संग्राम : आपका अन्दाज दुरुस्त मालूम पड़ता है।

महावत : नूरजहाँ ने यह नई चाल चली है। लिखा है कि मैं दरबार में फौरन हाजिरी दूँ और जीते हुए हाथियों को शाही खिदमत में पेश करूँ। मेरे आने के पहले उसने बादशाह को लाहौर से हटा दिया ताकि मैं और परेशान होऊँ। संग्रामसिंह, उस औरत ने मुझे काबुल का सूबेदार बना कर ईरानियों से जंग करने के लिए मुझे सरहद पर भेज दिया। लेकिन वहाँ भी ठीक से: रहने न दिया। शाहजादे खुर्रम ने बगावत की तो मुझे उसके पीछे लगा दिया।

संग्राम : इसमें भी मलेका की चाल होगी।

महावत : हाँ, नूरजहाँ की दुश्मनी हम दोनों से है। एक को दूसरे के खिलाफ खड़ा करने में उसकी बहुत चाल थी। इत्तेफाक था कि शाहजादे खुर्रम की शिकस्त हुई और मेरी फतेह। शाहजादे की ताकत खत्म करके अब वह मुझे दबाना चाहती है।

संग्राम : खाँ साहब, आप चाहे जो कहें, लेकिन बागी शाहजादे खुर्रम की हिम्मत की तारीफ करनी पड़ती है। दक्कन में उन्होंने बगावत का झंडा खड़ा किया। उड़ीसा, बंगाल और बिहार के सूबे उनके कब्जे में चले गये। अगर आप उनके खिलाफ न होते तो आज हिन्दुस्तान के बादशाह जहाँगीर नहीं, शाहजहाँ होते। आपने सल्तनतेमुगलिया की इज्जत बचा ली।

महावत : इसी का मुझे अफसोस है संग्रामसिंह। मैं क्यों जहाँगीर की तरफ से लड़ा? मैंने क्यों नूरजहाँ का हुक्म माना? मैं क्यों बागी खुर्रम के पीछे-पीछे दौड़ा? खुर्रम ने खत भेज कर मुझसे रुकने के लिये कहा था। लेकिन मैं अन्धा हो गया था। मेरी ईमानदारी, नमकहलाली और बहादुरी का ईनाम आज यही मिला है।

संग्राम : खाँ साहब, अगर आप चाहते तो खुर्रम को मदद करके मुगल तख्त को उलट देते। सम्राट् जहाँगीर और सम्राज्ञी नूरजहाँ के खेल को हमेशा के लिए खत्म कर देते।

महावत : गया वक्त वापस नहीं आता संग्रामसिंह। लेकिन कोई बात नहीं। तलवारों के साये में मैं रहता हूँ। मुझे किसी का खौफ नहीं है।

संग्राम : खाँ साहब, आपकी फौज में पाँच हजार राजपूत सिपाही हैं जिनकी नंगी तलवारें आपके ईशारे का इन्तजार कर रही हैं। वे बिजली की तरह चमकने को तैयार हैं।

महावत : संग्रामसिंह, अपनी फौज पर मुझे यकीन है। इन्हीं सिपाहियों की मदद से मैंने बागी शाहजादे खुर्रम को सर किया। ये सिपाही मेरे लिये जान दे देंगे, पर मैदान न छोड़ेंगे।

संग्राम : आप बजा फर्माते हैं।

महावत : मैं मलेका नूरजहाँ और बादशाह जहाँगीर को यह बता देना चाहता हूँ कि महावत खाँ पालतू जानवर नहीं है। वह एक इन्सान है जिसके सीने में हिम्मत और हाथ में तलवार है, जो इज्जत की कीमत जान देकर या लेकर चुकाता है।

संग्राम : खाँ साहब, यह ठीक है कि आपके सिपाही आपको धोखा नहीं देंगे। लेकिन शाही फौज से मुकाबला करना आसान नहीं है। खुर्रम ने हाल में मात खाई है। वो बेचारे कहीं के न रहे। खैरियत हुई कि नूरजहाँ ने सिर्फ उनके दो लड़कों को—दारा और औरंगजेब को—जमानत के तौर में रख कर ही छोड़ दिया। उन्हें बालाघाट की सूबेदारी भी बख्श दी।

महावत : संग्रामसिंह, शाही फौज ने कहने के लिये ही खुर्रम को शिकस्त दी। लेकिन असल में यह महावत खाँ की तलवार का जौहर था कि शाही फौज की लाज रह गई, वरना शाहजादे को शिकस्त देना आसान न था।

संग्राम : अगर आपकी शिकस्त होती तो ?

महावत : मेरी शिकस्त ? नामुमकिन। महावत खाँ का सामना करनेवाला कौन था ? और आज भी कौन है ? आज के मुगल सिपहसालारों के नाम मुझे जुबानी याद हैं। वजीर आसफ खाँ मुझसे चिढ़ा रहता है। खुर्रम के मामले को लेकर वह आगे बढ़ सकता था, लेकिन उसमें जंग करने की हिम्मत नहीं थी।

संग्राम : शाहजादे शहरयार के बारे में आपका क्या खयाल है ?

महावत : जहाँगीर के इस नालायक बेटे के साथ नूरजहाँ ने अपनी बेटी की शादी कर दी है और वह उसे ही हिन्दुस्तान का शाहंशाह बनाने का ख्वाब देख रही है। शहरयार इसी गुरूर में है। उसे पता नहीं कि तख्तोताज हासिल करने से पहले उसे परवेज और खुर्रम से निबटने पड़ेंगे। मेरे सामने तो वह खड़ा भी नहीं हो सकता। अगर वह हिन्दुस्तान का बादशाह हो जाये तो समझो सल्तनतेमुगलिया का खात्मा हुआ।

संग्राम : आप बजा फर्माते हैं।

महावत : मैंने खून देकर मुगल सल्तनत के इस पौधे को सींचा है। बादशाह जहाँगीर को अपने इंसाफ पर नाज है। मैं उनसे इंसाफ माँगूगा।

संग्राम : बहुत बुरा होगा खाँ साहब। नूरजहाँ के खिलाफ सम्राट् कुछ नहीं सुन सकते। बादशाह जहाँगीर मलेका के हाथों में हुकूमत की बागडोर देकर शराब में डूबे रहते हैं। नूरजहाँ की मुहब्बत में वे पागल हैं। उनसे कुछ भी नहीं हासिल हो सकता है।

महावत : संग्रामसिंह, सिसोदिया वंश में मेरा जन्म हुआ है। मेवाड़ के राणा प्रतापसिंह का खून मेरी नसों में भी है। राजा सगरसिंह का बेटा महीपतिसिंह हूँ मैं। बादशाह इतने बेवकूफ नहीं हैं कि मेरी बहादुरी को ललकारें। खैर, तुम फिक्र न करो। फौज को आगे बढ़ने का हुक्म दो।

संग्राम : जो आज्ञा।

—:o:—

तृतीय दृश्य

स्थान—झेलम-तट। शाही खेमे का एक भाग।

समय—रात।

(सम्राज्ञी नूरजहाँ चिन्तित भाव में टहल रही हैं।)

पहरेदार : (दूर में) खबरदार! झेलम का पानी बढ़ रहा है। नदी पार मत करो। खबरदार!

नूरजहाँ : झेलम का पानी बढ़ रहा है। हमारी फौज का एक बड़ा हिस्सा नदी पार चला गया है। लेकिन शाही खेमा अभी इसी तरफ है। रात हो चली। शायद सुबह के पहले हमलोग उस पार नहीं जा सकते।

(शहरयार का प्रवेश)

शहरयार : (पुकारते हुए आते हैं) लाडली! लाडली!!

नूरजहाँ : कौन?

शहरयार : (अचानक जैसे कोई भूल हुई हो) जी--जी--मैं हूँ--शहरयार। बेअदबी माफ हो। मैं लाडली को ढूँढ़ रहा था।

नूरजहाँ : (हँसती हुई) कोई बात नहीं। घबराने की जरूरत नहीं है। शाहजादे, भला तुम लाडली को क्यों ढूंढ रहे हो?

शहरयार : जी, बात यह है कि—मेरा मतलब है कि--

नूरजहाँ : क्या मतलब है?

शहरयार : जी, मेरी तबियत खराब हो गई है। इसीसे मैं कुछ परेशान हूँ। लाडली कहाँ है?

नूरजहाँ : तुम्हारी तबियत खराब है तो लाडली क्या करेगी? हकीम साहब को बुलवा लो।

शहरयार : हकीम साहब को? नहीं-नहीं, मैं फौरन ठीक हो जाऊँगा। हुजूर तो जानती हैं कि मैं पुराना मरीज हूँ। खता माफ हो, कुछ अर्ज कर सकता हूँ?

नूरजहाँ : बेशक। इजाजत है।

शहरयार : जी, जब हमारी सारी फौज नदी के उस पार चली गई है तो हमलोग इधर क्या किसी का इन्तजार कर रहे हैं?

नूरजहाँ : हाँ, हम वक्त का इन्तजार कर रहे हैं।

शहरयार : वक्त का? तो क्या नदी पार करने का कोई खास वक्त होता है?

नूरजहाँ : शाहजादे, झेलम का पानी बढ़ रहा है। अभी नदी पार करना खतरे से खाली नहीं है। उस तरफ जाने का पुल टूट सकता है।

शहरयार : लेकिन मुझे तो इस तरफ डर लगता है।

नूरजहाँ : डर लगता है? क्या बकते हो?

शहरयार : फौज उस पार चली गई। हमलोग थोड़े से लोग इधर छूट गये हैं। चारो तरफ सुनसान किनारा है। झेलम का पानी खौफनाक तरह से उछल-कूद मचा रहा है। रात के अंधेरे में यह आवाज मेरे दिल में कंपकंपी पैदा कर रही है।

नूरजहाँ : शहरहार, तुम अकेले नहीं हो। यहाँ बादशाह हैं, मैं हूँ, मेरी बेटी लाडली है, चुने हुए सिपाही हैं। डरने की कोई बात नहीं हैं। झेलम का पानी नीचे उतरा और हम नदी पार हुए।

शहरयार : झेलम का पानी कब तक नीचे उतरेगा ?

नूरजहाँ : कुछ कहा नहीं जा सकता। मुमकिन है, कल सुबह तक उतर जाये। यह भी मुमकिन है कि दो चार रोज लग जायें।

शहरयार : बड़ी मुसीबत है। अच्छा अम्मीजान, एक और सवाल अर्ज कर सकता हूँ ?

नूरजहाँ : पूछो।

शहरयार : लोग कहते हैं कि मैं बादशाह बनूँगा--हिन्दुस्तान का बादशाह। लाडली भी यही कहती है।

नूरजहाँ : वे सब ठीक कहते हैं। तुम हिन्दुस्तान के बादशाह बनोगे।

शहरयार : (खूब प्रसन्न होकर) वाह ! तब तो बड़ा मजा आयेगा। फौज को मेरा हुक्म मानना पड़ेगा। ठीक कहता हूँ न ?

नूरजहाँ : शहरयार, बादशाह होना कोई हँसी-खेल नहीं है। बादशाहत निभाना और भी मुश्किल है। तुम्हें चाहिये कि तुम लियाकत हासिल करो, शाहँशाह को खुश रखने की कोशिश करो।

शहरयार : मैं सब कुछ करूँगा।

नूरजहाँ : तुम तो जानते हो कि मैं तुम्हारे लिए क्या नहीं कर रही हूँ। तुम बादशाह के लड़के और मेरे दामाद हो। मैं खुद चाहती हूँ कि तुम ही तख्तनशीं होओ, लेकिन दुश्मनों के रहते ऐसा होना नामुमकिन है।

शहरयार : दुश्मन ? याने मेरे दुश्मन भी हैं ? सच-सच बताइये, क्या बादशाहत हासिल करने में कुछ खतरा भी है।

नूरजहाँ : हाँ, तुम्हें सभी खतरों का मुकाबला करना होगा। क्या तुम अपने दुश्मनों को जानते हो ?

शहरयार : बिल्कुल नहीं।

नूरजहाँ : तुम्हारे दुश्मन हैं------शाहजादा खुर्रम, शाहजादा परवेज़ और महावत खाँ। जब तक ये खत्म नहीं होंगे, तबतक तुम तख्तोताज हासिल नहीं कर सकते। मैं शुरू से इन तीनों के पीछे लगी हूँ। देखूँ, अंजाम क्या होता है ?

शहरयार : खुर्रम तो 'शिकस्त खा चुका है, परवेज़ से मैं नहीं डरता। वह जंग नहीं कर सकता। लेकिन महावत खाँ की याद आते ही मेरी रूह काँप जाती है।

नूरजहाँ : तुम बुज़दिल हो। अगर तुम महावत जैसे मामूली सिपाही को मात नही दे सकते तो हिन्दुस्तान की बादशाहत कैसे सँभाल सकते हो ?

शहरयार : इस पर अच्छी तरह गौर करना होगा। लगता है कि बादशाहत पाना कुछ मुश्किल है :

नूरजहाँ : कुछ भी मुश्किल नहीं है।

शहरयार : जी, क्या फ़रमाया हुजूर ने ?

नूरजहाँ : महावत खाँ के लिये मैं काफी हूँ। तुम उसके बारे में और न सोचो। तुम नहीं जानते शाहजादे कि मेरी तमन्ना क्या है ?

शहरयार : क्या है ?

नूरजहाँ : शाहज़ादा शहरयार हिन्दुस्तान के बादशाह और मेरी बेटी लाडली हिन्दुस्तान की मलेका हों------इससे बढ़कर खुशी की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है ?

शहरयार : मैं हुजूर का शुकगुज़ार हूँ ।

नूरजहाँ : अब तुम जाओ। आराम करो।

(शहरयार कोर्निश करके जाते हैं)

नूरजहाँ : खुले मैदान में घोड़ा दौड़ा दिया है। पता नहीं, किधर मुड़ता है। (दूर में कोलाहल) ये कैसा शोर है ?

(कोलाहल नजदीक आ रहा है। वजीर आसफ का प्रवेश)

आसफ : (घबराहट में) जहाँपनाह कहाँ हैं ?

नूरजहाँ : आसफ, तुम परेशान क्यों हो ? यह शोर कैसा है ?

आसफ : मेरी इल्तिजा है——मुझे आलमपनाह से मुलाकात करने दी जाये।

नूरजहाँ : (कड़ा स्वर) आसफ, होश में आओ। मलेका नूरजहाँ तुम से बातें कर रही है। बात क्या है ? यह शोर कैसा है ?

आसफ : मलेका, महावत——

नूरजहाँ : महावत ? क्या बकते हो ?

आसफ : खता माफ़ हो। मैं कुछ अजीब परेशानी में हूँ मलेका। बात यह है कि महावत खाँ आ गया है। यह उसी के सिपाहियों का शोर है।

नूरजहाँ : महावत खाँ यहाँ तक कैसे आ गया ?

आसफ : उसकी फौज में आँधी की चाल है मलेका।

नूरजहाँ : खैर, तुम जाओ। हाँ, सुनो, महावत खाँ की फौज कितनी है ?

आसफ : मलेका, हमारी जो फौज नदी के उस पार है, उससे कहीं ज्यादा फौज उसके पास है। हाँ, अगर उस पार की फौज इधर आ सके तो हम महावत खाँ से लड़ सकेंगे।

नूरजहाँ : ठीक है। तुम जाओ। मैं शाहंशाह से खुद बातें करती हूँ।

आसफ : अच्छी बात है। (प्रस्थान)

नूरजहाँ : ताज्जुब ! महावत खाँ की हिम्मत गज़ब की है। कुछ भी हो, इस जहरीले साँप को कुचलना ही होगा। लो, जहाँपनाह आ गये।

(सम्राट् जहाँगीर का प्रवेश। नूरजहाँ कोर्निश करती है।)

जहाँगीर : मलेका, यह शोर कैसा है ——?

नूरजहाँ : आलमपनाह, महावत खाँ एक बड़ी फौज के साथ आ धमका है।

जहाँगीर : हम इस बात को जानते थे बेगम। तुमने शेर को छेड़ा है। उसका अञ्जाम अच्छा नहीं होगा। इस वक्त हम नदी के इस किनारे लाचार पड़े हैं। उस पार फौज है। ——तुमने क्या सोचा है ?

नूरजहाँ : महावत खाँ ने बेअदबी की है। हम उसे सज़ा देंगे।

जहाँगीर : (ऊँची आवाज में) मलेका, सोच लो। यह तुम्हारी दूसरी ग़लती होगी। तुम नहीं जानतीं, इस वक्त हम सब उसकी मुट्ठी में हैं। जंग करने का हौसला मत करो।

नूरजहाँ : (सोचते हुए) तो फिर आलमपनाह क्या करेंगे ?

जहाँगीर : हम महावत खाँ का इस्तकबाल करेंगे। उसने बागी खुर्रम को शिकस्त दी है। सल्तनतेमुग़लिया की इज्जत बचाई है। हम उसे मुँहमाँगा इनाम देंगे। पहरे पर के सिपाहियों को हटा लो। महावत खाँ को हमारे रूबरू हाजिर होने का मौका दो।

नूरजहाँ : महावत खाँ काबिलेइतबार नहीं है जहाँपनाह। जोश में वह अंधा हो रहा है। अकेला पाकर वह जहाँपनाह की शान के खिलाफ कुछ भी कर सकता है।

जहाँगीर : नूरजहाँ, जहाँगीर की नजरों में अब भी वो बर्की ताकत मौजूद है जो सारे हिन्दुस्तान को मुग़ल तख्त के आगे झुका देती है। माबदौलत का हुक्म है, महावत खाँ को हमारे रूबरू आने दिया जाये।

नूरजहाँ : क्या जहाँपनाह इस पर अच्छी तरह गौर कर चुके हैं?

जहाँगीर : मलेका, तुम फिक्र न करो। पहरेदार, महावत खाँ को हमारे रूबरू आने दो। नूरजहाँ, तुम अन्दर जाओ।

(नूरजहां का प्रस्थान)

जहाँगीर : नूरजहाँ, तुमने इन्सान को पहचानने में भूल की। महावत खाँ मामूली इन्सान नहीं है।

(महावत खां का प्रवेश। झुक कर कोर्निश करते हैं।)

महावत : आलमपनाह की खिदमत में गुलाम कोर्निश बजा लाता है।

जहाँगीर : बहुत खूब! हम तुम्हारा इस्तकबाल करते हैं महावत खाँ।

महावत : इस्तकबाल? मैंने इसके लायक कोई काम नहीं किया है जहाँपनाह।

जहाँगीर : महावत, तुमने खुर्रम की बगावत दबा कर हमारी शान बढ़ाई है। खुर्रम को सर करने की हिम्मत हमारे किसी और सिपहसालार में नहीं थी।

महावत : जहाँपनाह ने गुलाम की नेकनीयती की तारीफ की। यह खुशी की बात है।

जहाँगीर : लेकिन महावत, तुम इस तरह अचानक हमारे रूबरू किस सबब से आये हो? तुम लाहौर में हमारे लौटने का इन्तजार तक न कर सके। आखिर बात क्या है?

महावत : जहाँपनाह से अपनी इस बेअदबी के लिए माफी का तलबगार हूँ।

जहाँगीर : महावत, तुम बेखौफ अपना बयान शुरू करो।

महावत : मैं आलमपनाह से इन्साफ की भीख माँगने आया हूँ।

जहाँगीर : इन्साफ की भीख?

महावत : हाँ जहाँपनाह, इंसाफ की भीख। जहाँगीरी इन्साफ मुगलों की तारीख में एक खास चीज है। आज मुझे इसकी जरूरत है। मैं दक्कन से लाहौर गया और लाहौर से इस झेलम नदी के किनारे तक आया। मैंने रास्ते में थोड़ा भी आराम नहीं किया। बेसब्री की सबब से मैंने शाही अदब-कायदे की पर्वाह न की और आपके इस खेमे में चला आया।

जहाँगीर : बयान जारी रहे।

महावत : जहाँपनाह जानते हैं कि मैंने मेवाड़ के सिसोदिया खान्दान में जन्म लिया, उस खान्दान में जिसमें राणा प्रताप हुए जिन्होंने आपके मरहूम वालिद अकबरशाह को पच्चीस साल तक नाकों चने चबवाये। मेरे पिता सगरसिंह ने मेवाड़ की जंग में शाही सेना का साथ दिया। बादशाह की तरफ से वो चित्तौड़ के राणा बने रहे। मैंने अपने खून का हर कतरा शाही मदद में लगाया। मेरी तलवार के आगे हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े सूरमा झुक गए। मैंने मुगल सल्तनत फैलाने में जी-जान से मदद की। मैं न होता तो शायद मेवाड़ का सूबा कभी भी शाही कदमों में न झुकता, मैं न होता तो आज मुगल तख्त पर शाहजादा खुर्रम नजर आते—और—जहाँपनाह———

जहाँगीर : (ऊँची आवाज में—आवेश से) महावत खाँ!

महावत : गुस्ताखी माफ हो जहाँपनाह। ये मेरी ईमानदारी के सबूत हैं। लेकिन इस ईमानदारी का ईनाम मुझे क्या मिला? मुझे दूर काबुल के मोर्चे पर भेजा गया, कन्दहार की जंग में ईरानियों से लड़ने को कहा गया। मुझे निकम्मे शाहजादे परवेज के नीचे रखकर शाहजादे खुर्रम की बगावत दबाने का हुक्म दिया गया, मुझ पर यह इल्जाम लगाया गया कि मैंने लड़ाई में लूट का माल जमा किया है, मुझे बेईमान करार देकर मुझसे कैफियत माँगी गई, हाल में जानबूझ कर मेरे दामाद को शाही हुक्म से बेइज्जत किया गया।

जहाँगीर : महावत, हमें सचमुच इनमें से बहुत-सी बातों का इल्म नहीं है।

महावत : शाही हुकूमत की आड़ में ये सब हुआ है। मलेक-ए-आलम नूरजहाँ ने जानबूझ कर मुझे तंग किया है। क्या जहाँपनाह मुजरिम को सजा दे सकेंगे?

जहाँगीर : (चुप)

महावत : आलमपनाह चुप हैं। जहाँगीरी इन्साफ खामोश है। मैं यह जानता था। खैर, कोई बात नहीं। वक्त आने पर सब हो जायेगा। (कुछ शान्त स्वर में) मेरी एक और इल्तिजा है।

जहाँगीर : बताओ महावत!

महावत : सिपाही समझते हैं कि मैंने अचानक शाही फौज पर हमला किया है और आप मेरे कैदी हैं। जहाँपनाह एक बार मेरे साथ बाहर निकलें और सिपाहियों के सामने खड़े हों ताकि उन्हें इतमिनान हो जाये कि हुजूर महफूज हैं और मैं वही आपका खैरखाह गुलाम महावत खाँ हूँ।

जहाँगीर : हमें मन्जूर है। लेकिन एक वादा करो महावत। नूरजहाँ हमारे साथ है। इसे तुम्हारे सिपाही हमारी गैरहाजिरी में कुछ न कहेंगे।

महावत : अगर मलेका मेरे सिपाहियों से कुछ नही बोलेंगी तो वे सब भी खामोश रहेंगे।

जहाँगीर : ठीक है। हमारा हाथी तैयार कराओ। हम बाहर चलेंगे।

महावत : जहाँपनाह हाथी पर नहीं जायेंगे। मेरे इस घोड़े पर जायेंगे। दूसरे घोड़े पर मैं रहूँगा।

जहाँगीर : ऐसा नहीं होगा। हम तुम्हारे घोड़े पर नहीं जा सकते।

महावत : जहाँपनाह की जिद बेकार है।

जहाँगीर : क्या हम अपने कपड़े बदल सकते हैं ?

महावत : इसकी कोई जरूरत नहीं है।

जहाँगीर : (कुछ चिढ़ कर) महावत ! तुम हद से बाहर जा रहे हो।

महावत : जहाँपनाह इसे जो भी चाहें, समझें।

जहाँगीर : इसके क्या माने ? हम क्या तुम्हारे कैदी हैं ?

महावत : जहाँपनाह हमारे कैदी नहीं हैं। लेकिन अपनी मर्जी से कुछ भी नहीं कर सकते। मलेका भी कुछ नहीं कर सकतीं।

जहाँगीर : (चीखकर-अपमानित भाव) महावत !

महावत : जहाँपनाह जल्दी करें। घोड़ा तैयार है। मैंने झेलम-नदी के पुल पर कड़े पहरे का इन्तेजाम कर दिया है। शाही फौज का एक भी आदमी उस पार न जा सकेगा। आपलोगों के लिये कोई रोकटोक नहीं है। अगर कोई जबर्दस्ती करेगा तो उसे गोली मार दी जायेगी।

जहाँगीर : महावत, तुमने हमारी लाचारी से फायदा उठाना चाहा है।

महावत : क्या मतलब ?

जहाँगीर : हमारी फौज नदी के उस पार है। तुमने हमें अकेले पाकर हम पर हमला किया है। शाही फौज की मौजूदगी में तुम्हारी इतनी जुर्रत न होती।

महावत : यह इत्तेफाक है जहाँपनाह कि शाही फौज नदी के उस पार है। लेकिन मैंने कोई हमला नहीं किया है।

आलमपनाह से मुलाकात करने का यही एक रास्ता बच रहा था। खैर, कोई बात नहीं। हुजूर अन्दर जाकर तैयार हो लें। शाही शान मेरी वजह से कम न हो।

जहाँगीर : हम तुम्हारी समझदारी की तारीफ करते हैं महावत। हम अभी आये।

(प्रस्थान। महावत टहलते रहते हैं। दूर में रणघोष। महावत चौंकते हैं। संग्रामसिंह का प्रवेश।)

संग्राम : खाँ साहब, गजब हो गया।

महावत : यह जंग कैसी है ?

संग्राम : नूरजहाँ ने हम पर हमला किया है।

महावत : नूरजहाँ ने ? शाही खेमे के चारों तरफ तरफ तो कड़ा पहरा है।

संग्राम : आपने पुल पार करने पर शाही फौज के लिए रोक लगा दी थी, लेकिन आमलोगों के लिए मनाही न थी। नूरजहाँ ने आपके इस आदेश से फायदा उठाया। वो मामूली लिबास में चुपचाप पुल के उस पार चली गईं। फिर शाही फौज लेकर हम पर हमला कर दिया।

महावत : (चीख कर) संग्रामसिंह ! मेरी मिहनत बेकार गई। यह सब तुम्हारी बेवकूफी से हुआ।

संग्राम : नूरजहाँ हाथी पर सवार हैं। उन्होंने हुक्म दिया है कि फौज तैर कर नदी पार करे और हम पर हमला करे।

महावत : संग्रामसिंह, नूरजहाँ की अक्ल की तारीफ करनी पड़ती है। तुम जाओ, जंग से पीछे न हटो। अगर मलेका इधर बढ़ें तो आने देना और फिर घेर लेना। जाओ।
(संग्रामसिंह का प्रस्थान। रणघोष निकटतर।)

नूरजहाँ : (नेपथ्य से) सिपाहियो, महावत को कैद कर लो। उसने तुम्हारे बादशाह को नजरबन्द कर रखा है। आगे बढ़ो।

महावत : आज मुझे मालूम हुआ कि यह औरत सचमुच हुकूमत करने के लिए ही पैदा हुई है।

(सम्राट् जहाँगीर का प्रवेश)

जहाँगीर : महावत, यह जंग कैसी ?

महावत : मलेका ने हम पर हमला किया है।

जहाँगीर : नामुमकिन ! नूरजहाँ को मैंने पहले ही मना कर दिया है।

महावत : जहाँपनाह, यह जंग मलेका और मेरे बीच है। जब उन्होंने हमला किया है तो हमें जवाब देना ही होगा।

जहाँगीर : हमें नूरजहाँ की इस हरकत से अफसोस है महावत।

महावत : जहाँपनाह, आप यहीं आराम करें। मैं अभी आया।
(प्रस्थान)

जहाँगीर : लगता है, मलेका की फौज नजदीक आ गई है।
(टहलते रहते हैं। रणघोष चलता रहता है। नूरजहाँ का प्रवेश। जंगी वेश। बन्दगी करती है।)

जहाँगीर : मलेका, तुमने यह क्या किया ? किसने कहा था कि तुम महावत की फौज पर हमला करो ? क्यों ये खतरा तुमने मोल लिया ?

नूरजहाँ : महावत खाँ के कैद में आलीजाह कब तक रहते ? अपने आका को कैद में देखने से अच्छा था कि लड़ती हुई मैं मारी जाती। लेकिन होना कुछ और था। मैं कामयाब न हो सकी। शाही फौज हार गई। बड़ी मुश्किल से मैं जहाँपनाह तक पहुँच पायी हूँ।

जहाँगीर : होना यह था कि हमारे सिपाही फजूल में मारे जायें और तुम शिकस्त खाकर हमारी ही तरह कैद हो जाओ। आज महावत खाँ के कदमों पर हिन्दुस्तान का तख्तोताज है। वह चाहते ही बादशाह हो सकता है।

महावत : (आते हुए) नहीं जहाँपनाह, ऐसा नहीं हो सकता।

नूरजहाँ : कौन ? महावत ?

महावत : हाँ मलेका, आपका गुलाम।

नूरजहाँ : नहीं महावत खाँ, मेरी कोशिश नाकाम हुई। मेरी वजह से इतने सिपाही कट मरे। झेलम का पानी खून से लाल हो गया है। गलती मेरी है।

जहाँगीर : महावत, हमारी एक ख्वाहिश है। क्या पूरी कर सकोगे ?

महावत : हुक्म दीजिये जहाँपनाह। खादिम तामील करने के लिए तैयार है

जहाँगीर : यह कटार लो। ज़हर से बुझी है। हमारा और मलेका का खून कर दो। हमारी लाशों को एक साथ झेलम में फिकवा दो। कोई नहीं जान पायेगा कि अकबर के बेटे को तुमने मारा है। कोई नहीं जान पायेगा कि नूरजहाँ के कातिल तुम हो। उसके बाद तख्त पर तुम खुद बैठ सकोगे या जिसे भी चाहोगे, बिठा सकोगे।

नूरजहाँ : महावत, मेरी भी एक खाहिश है। पहले मेरा खून करो। बादशाह सलामत को मैं मरते नहीं देख सकूँगी। (रो पड़ती है) नहीं देख सकूँगी।

महावत : यह क्या ? मलेका-ए-आलम रो रही हैं ? जहाँपनाह, कटार इधर दें। इसकी जगह आपके सीने में नहीं, बलके मेरे सीने में है।

जहाँगीर
नूरजहाँ } : (एक साथ चिल्ला उठते हैं) महावत !

महावत : जहाँपनाह, मेरी बेअदबी की यही सजा है। मलेका नूरजहाँ के खिलाफ मैंने बगावत की थी। लेकिन मैंने नहीं समझा था कि वो एक ऐसी औरत हैं जो शाहंशाह की जान बचाने के लिए फौज के साथ उमड़ती नदी में कूद सकती हैं, बादशाह की जान देने के पहले अपनी जान दे सकती हैं।

जहाँगीर : महावत, पुरानी बातें भूल जाओ।

नूरजहाँ : अपनी गलती पर हमें अफसोस है महावत।

महावत : जहाँपनाह, महावत खाँ आपके सामने खड़ा है। हुक्म फरमाइये।

नूरजहाँ : महावत, जहाँपनाह काबुल के दौरे पर जा रहे हैं। खेमे उखाड़ो। फौज को हुक्म दो कि सफर जारी किया जाये। तुम हमारे साथ काबुल चलोगे।

महावत : जो हुक्म मलेका।

(यवनिका-पतन)

*

चतुर्भुज, एम०ए०, से लिखित

अभिज्ञान-प्रकाशन,

द्वारा प्रस्तुत साहित्य

झेलम के किनारे

(तीन ऐतिहासिक एकांकी)

इतिहास बोल उठा

(दुर्लभ, अज्ञात ऐतिहासिक लेखों का संग्रह)

दिल्ली की सुलताना

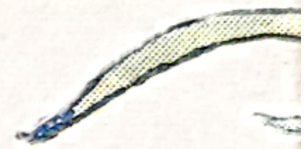
(ऐतिहासिक कथा-संग्रह)

भारतीय इतिहास का सफेद साँप

(ऐतिहासिक लेख-संग्रह)

मनूचीकृत संक्षिप्त

मुगलकालीन इतिहास





अभिज्ञान प्रकाशन
राँची